॥ ॐनमः ॥

॥ मेरी सुरति अन्तरमें लागी रे, मे तो हुओ वडभागी रे ॥ मे० ॥ ए टेर ॥
दुनियादारि दुर करीने, मै तो हुओ अन्तर वैरागी रे ॥ मे० ॥ १ ॥
नरनारी नपुंसकवेदी, नही तात मात सुत त्यागी के वैरागी रे ॥ मे० ॥ २ ॥
पर परिणती दुर करीने, मै तो स्वमत थयो रागी रे ॥ मे० ॥ ३ ॥
अलख निरजन अजरअमर हु, शुद्ध चेतनता घट जागी रे ॥ मे० ॥ ४ ॥
चिद्घन चेतन स्वप्रकाशित, मै तो आनन्दमय वडभागी रे ॥ मे० । ५ ॥
सुखम सरोवर नायके बैठो, जलहल ज्योति तिहा जागी रे ॥ मे० ॥ ६ ॥
बाजमें दु ख अन्तरमें सुख, तिहा तो अनहद मुरली बाजी रे ॥ मे० ॥ ७ ॥
रति अरति दुर करीने, आनन्दघन प्रभु हुवा शिवरागी रे ॥ मे० ॥ ८ ॥
सेवक जीतनी येही अरज हं, परपरिणतिसे उगारो शिवगामी रे ॥ मे० ॥ ९ ॥

॥ इति शुभम ॥

आतम अनुभवे आतमा, लहे मुक्ति आवास ॥
परमां बुद्धि निहालता, होवे पुद्गलना दास ॥ २० ॥
परभावे रमता थका, लहे न शुद्ध स्वरूप ॥
भेदज्ञान दृष्टी थकी, कोइक लहे स्वरूप ॥ २१ ॥
आधि व्याधि मिट गइ, मिट गइ इच्छा आश ॥
शत्रु मित्र एक भाव है, खेले अनुभव पास ॥ २२ ॥
आतम अनुभव ज्ञानसें, टले मतिभ्रम दोष ॥
अनुभव विन जाने नहीं, बहिरातम मतिदोष । २३ ॥
ज्ञानदर्शन चारित्र है, रत्नत्रयि पद सार ॥
चिद्घन आतम स्वरूप है, गुरुगम लहे निरधार ॥ २४ ॥
अनुभव पचिशी कही, भव्य जीव हितकार ॥
आनन्दघन गुरु कृपा थकी, जीतलहे भवपार ॥ २५ ॥

इति कल्याणमस्तु

विषय विकल्प वासते, लहे न अनुभव ज्ञान ॥
निर्विकल्प अनुभव लहे, प्रगटे आतम नाण ॥ १३ ॥

ज्ञानी आत्म अनुभव लहे, राग द्वेष करी नास ॥
अल्प भवे भवि ते लहे, अविचल पुरको वास॥ १४ ॥

आत्म द्रव्य अनुभव विना, लहे न सुखकी खान॥
आतम अनुभव ज्ञानसे, लहे मोक्षको स्थान ॥ १५ ॥

पढे ग्रंथ अनुभव विना, कटे न मोहकी जाल ॥
आत्म अनुभव ज्ञानसें, नासे वह तत्काल ॥ १६ ॥

ग्रहण योग्य है आतमा, त्याग योग्य है कर्म ॥
ज्ञान ध्यान सयोगसे, प्रगटे आतम धर्म ॥ १७ ॥

शुद्ध अनुभव ज्ञानसे, लहे भविक जन मुक्ति ॥
परभावे ससार है, येहीज साची युक्ति ॥ १८ ॥

अनुयोग चारमा सार है, द्रवाणु कहे जिननाम ॥
श्री सद्गुरुकी कृपासें, समझे आतमराम ॥ १९ ॥

निर्लिंगमे धर्म नही, जो माने सो मूढ ॥
वस्तु स्वभावे धर्म हे, यह परमारथ गूढ ॥ ६ ॥

धर्म अरूपी आतमा, जाने ध्यानी राय ॥
अनुभव स्वाद ते लहे, अल्प भवे शीव जाय ॥ ७ ॥

आतम स्वरूप समझे नही, समझे नही नयवाद ॥
क्रिया काडमे पचमरे, लहे न आतम स्वाद ॥ ८ ॥

भोले जन समझे नही, आतम धर्म स्वरूप ॥
आतम अनुभव ज्ञान विन, डूबे भवजल कूप ॥ ९ ॥

यश कीर्ति रच्छे घणी, चेला पुस्तक माल ॥
तस किरिया वृथा कही, बोले उपदेश माल ॥ १० ॥

आतम धर्म अगम्य है, जाने नहीं नह लेश ॥
जप तप क्रिया काडसे, छूटे नहीं क्लेश ॥ ११ ॥

आतम ध्याने मुनिरायने, मनकपि वा यो लाय ॥
सोऽहं तार लगायके, लिया शिवपद जाय ॥ १२ ॥

॥ अथ अनुभव पञ्चविंशाति लिख्यते ॥

प्रणमी भगवति भारति, प्रणमी जिनजगबधु ॥
आत्म अनुभव कारणे, रचु पञ्चविंशी प्रबंध ॥ १ ॥
यह शत्रु यह मित्र है, यहः सुख परिवार ॥
जबलग बुद्धि एहवी, तबलग है ससार ॥ २ ॥
पर सगे रगी सदा, अनुभव लहे न कोय ॥
अनुभव आतम कारणे, बहिरातम पद खोय ॥ ३ ॥
उच नीच अज्ञानसें, जबतक जाने तेह ॥
तबलग है ससारमे, लहै न भवनो छेद ॥ ४ ॥
उंच नीच आतम नही, अज्ञान भरमको दोष ॥
उंच नीच समझे नही, कैसे लहे सुख पोष ॥ ५ ॥

निर्लिंगमे धर्म नही, जो माने सो मूढ ॥
वस्तु स्वभावे धर्म है, यह परमारथ गूढ ॥ ६ ॥

धर्म अरूपी आतमा, जाने ध्यानी राय ॥
अनुभव स्वाद ते लहे, अल्प भवे शीव्र जाय ॥ ७ ॥

आत्म स्वरूप समझे नही, समझे नही नयवाद ॥
क्रिया काडमे पचमरे, लहे न आतम स्वाद ॥ ८ ॥

भोले जन समझे नही, आतम धर्म स्वरूप ॥
आत्म अनुभव ज्ञान विन, डूबे भवजल कूप ॥ ९ ॥

यश कीर्ति वच्छे घणी, चेला पुस्तक माल ॥
तस किरिया वृथा कही, बोले उपदेश माल ॥ १० ॥

आतम धर्म अगम्य है, जानें नहा वह लेश ॥
जप तप क्रिया काडसे, छूटे नही क्लेश ॥ ११ ॥

आत्मध्याने मुनिरायने, मनकपि वा यो लाय ॥
सोऽहं तार लगायके, लिया शिवपद जाय ॥ १२ ॥

॥ अथ अनुभव पञ्चविंशति लिख्यते ॥

मणमी भगवति भारति, मणमी जिनजगबंधु ॥
आतम अनुभव कारणे, रचु पञ्चविंशी मबंध ॥ १ ॥
यह शत्रु यह मित्र है, यह मुझ परिवार ॥
जबलग बुद्धि एहवी, तबलग है ससार ॥ २ ॥
पर संगे रंगी सदा, अनुभव लहे न कोय ॥
अनुभव आतम कारणे, बहिरातम पद खोय ॥ ३ ॥
उच नीच अज्ञानसें, जबतक जाने तेह ॥
तबलग है संसारमे, लहै न भवनो छेह ॥ ४ ॥
उंच नीच आतम नही, अज्ञान भरमको दोष ॥
उंच नीच समझे नही, कैसे लहे सुख पोष ॥ ५ ॥

रयसुलह) मन वच और काया यह तीन दडकका विरामसे सुर्लभ एसो (लहुममदिंतुमुरकपय) मोक्ष पद जल्दी देवो ॥ ४१ ॥

॥ सिरिजिणहंसमुणीसर, रज्जेसिरिधवलचदसीसेण
गजसारेणलिहिया, एसाविन्नत्तीअप्पहिया ॥ ४२ ॥

॥ (सिरिजिणहसमुणीसर) श्री जिनहसमुनिके (रज्जेसिरिधवलचदसीसेण) राज्यके समय श्री धवलचद्रमुनीके शिष्य (गजसारेणलिहिया) गजसार मुनिने लिखा है (एसाविन्नत्तीअप्पहिया) यह विज्ञप्ति अपनी आत्माके अर्थे ॥ ४२ ॥

॥ इति श्रीमन्महायोगीन्द्र आनदघन महाराज चरणोपासक जित विरचित हिन्दी अनुवाद सहित दडक प्रकरण समाप्तम् ॥

णनिरयवतरिया) वैमानिक भुवनपति नारक और व्यतर **(जोइसचउपणतिरिया)** ज्योतिषि चौरिन्द्रि और पचेन्द्रि तिर्यच **(बेइदितिइदिभूआउ)** तथा दोइन्द्रि तेइन्द्रि पृथ्वीकाय और अप्काय ॥ ३९ ॥

॥ वाऊवणस्सइंचिय, अहियाअहियाकमेणमेहुति
सव्वेविइमेभावा, जिणामएणतसोपत्ता ॥ ४० ॥

॥ **(वाऊवणस्सईचिय)** वाउकाय और वनस्पतिकाय यह सब निश्चय करके **(अहियाअहियाकमेणमेहुति)** अनुक्रमे एक एकसे अधिक होते है **(सवेविइमेभावा)** यह सबही भी भावो **(जिणामएणतसोपत्ता)** हे जिनेश्वर देव मैंने अनती वेर प्राप्त किया है ॥४०॥

॥ सपइतुह्मभत्तस्स, दडगपयभमणभग्गहिययस्स
दडतियविरयसुलह, लहुममदिंतुमुरकपय ॥ ४१ ॥

॥ **(सयइतुम्भभत्तस्सदडगपयभमणभग्गहिययस्स)** अत्र चौवीश दडकोंके स्थानकके बिषे भमनेसे निवृत्त हुवा हे मन जिसका एसा तुमारा भक्त एसा मुझको **(दंडतियवि-**

सब दंडकोके विषे होता है (सवत्थजंतिमणुआ) और मनुष्योकाभी जाना सब दंडको के विषे होता है (तेउवाऊहिंनोजंति) परंतु तेउकाय और वाउकायके विषे नही जाने ॥ ३७ ॥

॥ वेयतियतिरिनरेसु, इत्थीपुरिसोयचउविहसुरेसु
थिरविगलनारएसु, नपुसवेओहवइएगो ॥ ३८ ॥

॥ (वेयतियतिरिनरेसु) तीन वेद तिर्यंच और मनुष्यको होते है (इत्थीपुरिसो यचउविहसुरेसु) और चार प्रकारके देवोके विषे स्त्री वेद तथा पुरुष वेद होते है (थिरविगल-नारएसु) और पांच स्थावर विकलेंद्रि और नारकके विषे (नपुसवेओहवइएगो) एक नपुंसक वेदही होते हे ॥ १८ ॥

॥ पज्जमणुवायरग्गी, वेमाणियभवणनिरयवंतरिया
जोइसचउपणतिरिया, वेइंदितिइंदिभूआउ ॥ ३९ ॥

॥ अब अल्प बहुत्व द्वार कहते है ॥

॥ (पज्जमणुवायरग्गी) पर्याप्ता मनुष्य और बादर अग्निकाय (वेमाणियभव-

॥ (पुढवाइदसपएसु) पृथ्वीकायादि दश पदके विषे (पुढवीआउवणस्सई-जंति) पृथ्वीकाय अप्काय और वनस्पतिकायके जीवो सब होते है (पुढवाइदसपएहिय) और पृथ्वी कायादि दश पदमेंसे निकले हुये जीवों (तेउवाउसुउववाओ) तेउकाय और वाउकायके विषे उत्पन्न होते है ॥ २५ ॥

॥ तेउवाउगमण, पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे
पुढवाइठाणदसगं, विगलाइतियतहिजंति ॥ ३६ ॥

॥ (तेउवाउगमण) तेउकाय और वाउकायकाजाना (पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे) पृथ्वीकायादि नवपदक विषे होते है (पुढवाइठाणदसग) पृथ्वीकायादि दश स्थानकके जीवों (विगलाइतियतहिजंति) तीन विकलेन्द्रिय उत्पन्न होते हे ॥ ३६ ॥

॥ गमणागमणगब्भय, तिरिआणसयलजीवठाणेसु
सव्वत्थजंतिमणुआ, तेउवाहुहिनोजंति ॥ ३७ ॥

॥ (गमणागमणगब्भयतिरिआणसयलजीवठाणेसु) गर्भजतिर्यंचका जाना आना

सब दडकोके विषे होता है (सवत्थजंतिमणुआ) और मनुष्योकाभी जाना सब दडको के विषे होता है (तेउवाऊहिंनोजति) परतु तेउकाय और वाउकायके विषे नही जाते ॥ ३७ ॥

॥ वेयत्तियतिरिनरेसु, इत्थीपुरिसोयचउविहसुरेसु
थिरविगलनारएसु, नपुसवेओहवइएगो ॥ ३८ ॥

॥ (वेयतियतिरिनरेसु) तीन वेद तिर्यंच और मनुष्यको होते हे (इत्थीपुरिसोयचउविहसुरेसु) और चार प्रकारके देवोके विषे स्त्री वेद तथा पुरुष वेद होते हे (थिरविगलनारएसु) और पाच स्थावर विकलेंद्रि और नारकके विषे (नपुसवेओहवइएगो) एक नपुसक वेदही होते हे ॥ ३८ ॥

॥ पज्जमणुबायरग्गी, वेमाणियभवणनिरयवतरिया
जोइसचउपणतिरिया, वेइंदितिइंदिभूआउ ॥ ३९ ॥

॥ अब अल्प बहुत्व द्वार कहते हे ॥

॥ (पज्जमणुबायरग्गी) पर्याप्ता मनुष्य और बादर अग्निकाय (वेमाणियभव-

॥ (पुढवाइदसपएसु) पृथ्वीकायादि दश पदके विषे (पुढवीआउवणस्सई-जंति) पृथ्वीकाय अप्काय और वनस्पतिकायके जीवो सब होते है (पुढवाइदसपएहिंय) और पृथ्वी कायादि दश पदमसे निकले हुये जीवो (तेउवाउसुउववाओ) तेउकाय और वाउकायक विषे उत्पन्न होते है ॥ ३५ ॥

॥ तेउवाउगमण, पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे
पुढवाइठाणदसग, विगलाइनियताहिजंति ॥ ३६ ॥

॥ (तेउवाउगमण) तेउकाय और वाउकायकाजाना (पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे) पृथ्वीकायादि नवपदके विषे होते हे (पुढवाइठाणदसग) पृथ्वीकायादि दश स्थानकके जीवों (विगलाइतियतहिजंति) तीन विकलेन्द्रिम उत्पन्न होते हे ॥ ३६ ॥

॥ गमणागमणगब्भय, तिरिआणसयलजीवठाणेसु
सव्वत्थजंतिमणुआ, तेउवाहुहिंनोजंति ॥ ३७ ॥

॥ (गमणागमणगब्भयतिरिआणसयलजीवठाणेसु) गर्भजतिर्यचका जाना आना

॥ पज्जत्तसखगप्भय तिरियनरानिरयसत्तगेजति
निरउवट्टाएएसु उववज्जतिनसेसेसु ॥ ३३ ॥

॥ (पज्जत्तसखगप्भय) सख्याता वर्षके आयुवाले पर्याप्त गर्भज (तिरियनरा) तिर्यंच और मनुष्य (निरयसत्तगेजति) यह दोनोही सातोही नारकके विषे जाते हे (निरउवट्टा) इस सातोही नारकसे निकले हुवे जीवो (एएसु) यह दो दडक विन (उववज्जतिनसेसेसु) शेष दडकोक विषे उत्पन्न नही होते है ॥ ३३ ॥

॥ पुढवीआउवणस्सइ मज्झेनारयविवज्जियाजीवा
सव्वेउववज्जति नियनियकम्माणुसाणेण ॥ ३४ ॥

॥ (पुढवीआउवणस्सइ) पृथ्वीकाय अप्काय और वनस्पतिकाय (मज्झे) विषे (नारयविवज्जियाजीवा) नारकके जीवोंको वर्जके (सव्वेउववज्जति) और सर्व जीवो उत्पन्न होत है (नियनियकम्माणुसाणेण) अपने अपन कर्मानुसारे ॥ ३४ ॥

॥ पुढवाइदसपएसु, पुढवीआउवणस्सईंजति ॥
पुढवाइदसपएहिय, तेउवाउसुउववाओ ॥ ३५ ॥

॥ (मणुआणदीहकालिय) मनुष्यको दीर्घकालकी सज्ञा होति है (दिठीवाओवए-सिआकेवि) कितनेक मनुष्यको दृष्टिवादोपदेशकी २१ सज्ञा भी होती है ॥ इति चोवीश दडके तिन प्रकारकी सज्ञाद्वार ॥

॥ अव गति आगति दो द्वार कहते है ॥

(पज्जपणतिरिमणुअच्चिय) पर्याप्ता पचेंद्रितिर्यंच और मनुष्य निश्चय करके (चउविहदेवे-सुगच्छति) चार प्रकारके देवोके विषे जाते हे ॥ २१ ॥

॥ सखाउपज्जपणिंदि तिरियनरेसुतहेवपज्जत्ते
भूदगपत्तेयवणे एएसुच्चियसुरागमण ॥ ३२ ॥

॥ (सखाउपज्जपणिदि) सख्यात आयुवाले पर्याप्तापचेंद्री (तिरियनरेसु-तहेवपज्जत्ते) तेसेही पर्याप्ता तिर्यंच और मनुष्यके विषे (भूदगपत्तेयवणे) पृथ्वीकाय अपकाय और प्रत्येक वनस्पतिकाय (एएसुच्चिय) इस पाचोके विषे निश्चय करके (सुरा-गमणं) देवताका आना इस लिये उत्पन्न होना ॥ ३२ ॥

॥ अब किमाहारद्वार कहते है ॥

(छद्दिसिआहारहोइसवेसिं) सब जीवोंके आशरे छेही दिशीका आहार जान लेना (पणगाइप-एभयणा) इतना विशषकि पृथ्वी कायादि पाचोही स्थावर पदके विषे भजना हे इस लिए छए दिशीका आहार होवे भी सही और नही भी होवे २० ॥ ईति चौवीश दंडके छेदिशी आहारद्वार ॥ (अहसन्नितियंभणिस्सामि) अब तीन सज्ञाद्वार कहता हु ॥ ॥ २९ ॥

॥ चउविहसुरतिरिएसु निरएसुअदीहकालिगीसन्ना
विगलेहेउवएसा सन्नारहियाथिरासवे ॥ ३० ॥

॥ (चउविहसुरतिरिएसु) चार प्रकारके देवोंके विषे तथा तिर्यंच (निरएसुअदीहकालिगीसन्ना) और नारकके विषे दीर्घ कालकी सज्ञा होति है (विगलेहेउवएसा) और विकलेंद्रिके विषे हितोपदेशकीसज्ञा होति हे (सन्नारहियाथिरासवे) और स्थावरो सबही सज्ञा रहित होते है ॥ ३० ॥

॥ मणुआणदीहकालिय दिट्ठीवाओवएसिआकेवि
पज्जपणतिरिमणुअच्चिय चउविहदेवेसुगच्छंति ॥ ३१ ॥

॥ वेमाणियजोइसिया पल्लतयठंसआउआहुंति
सुरनरतिरिनिरएसु छपज्जत्तीथावरेचउगं ॥ २८ ॥

॥ (वेमाणियजोइसिया) वेमानिक और ज्योतिषीका आयु जघन्यसें (पल्लतयठ-सआउआहुंति) एक पल्योपमके आठमे भागे होते है १८ ॥ इति चौवीश दडके उत्कृष्ट और जघन्यसे स्थितिद्वार कहा ॥

॥ अब पर्याप्तिद्वार कहते है ॥

(सुरनरतिरिनिरएसु) देवता मनुष्य तिर्यच और नारकके विषे (छपज्जत्ती) छेही पर्याप्ति होति है (थावरेचउग) और पाच स्थावरके विषे प्रथमकी चार पर्याप्ति है ॥ २८ ॥

॥ विगलेपचपज्जत्ती छदिसिआहारहोइसव्वेसि
पणगाइपएभयणा अहसन्नितियभणिस्सामि ॥ २९ ॥

॥ (विगलेपंचपज्जत्ती) तीनो विकलेंद्रिक विषे प्रथमकी पाच पर्याप्ति होति है १९ ॥ इति चौवीश दडके पर्याप्तिद्वार ॥

॥ असुराणअहियअयर देसूणदुपल्लयनवनिकाए
बारसवासुणपणदिण छम्मासउक्किट्ठविगलाऊ ॥ २६ ॥

॥ (असुराणअहियअयर) असुरकुमारनिकायका आयु एक सागरोपमसें कुछ अधिक होते है (देसूणदुपल्लयनवनिकाए) शेषनवनिकायका आयु दसेऊणा दो पल्योपमका होते है (बारसवासुणपणदिण) बारह वर्ष और गुण पचास दिन (छम्मासउक्किट्ठविगलाऊ) छ मासका उत्कृष्ट आयु अनुक्रमसें विकलेंद्रिका समज लेना ॥ २६ ॥

॥ पुढवाइदसपयाण अंतमुहुत्तजहन्नआउठिई
दससहसवरिसठिइआ भवणाहिवनिरयवंतरिया ॥ २७ ॥

॥ (पुढवाइदसपयाण) पृथ्वीकायादि दशपदकी इसलिये पांच स्थावर तीन विकलेंद्रि तिर्यंच और मनुष्यकी (अंतमुहुत्तजहन्नआउठिई) जघन्यसें आयुकी स्थिति अंतर्मूहुर्त्तकी कही है (दससहसवरिसठिइआ) दश हजार वर्षकी आयुस्थिति जघन्यसें (भवणाहिवनिरयवंतरिया) दश भुवनपति नारक और व्यंतरीकी कही है ॥ २७ ॥

जेसेही उत्पन्न होते है (तहेवचवणेवि) तेसेही चवते है ॥ इति चौवीश दडके उपपातद्वार तथा चवणद्वार

॥ अत्र (स्थिति) आयुद्वार कहते है ॥

(वावीससगतिदसवाससहस्स) बावीस हजार सात हजार तिन हजार और दश हजार वर्षको आयु (उक्किट्ठपुढवाई) उत्कृष्टो अनुक्रमे पृथ्वीकायादि इस लिये पृथ्वीकाय अप्काय वाउकाय और वनस्पतिकायका जान लेना ॥ २४ ॥

॥ तिदिणग्गितिपल्लाऊ नरतिरिसुरनिरयसागरतितीसा वतरपल्लजोइस वरिसलक्खाहिअपलिअ ॥ २५ ॥

॥ (तिदिणग्गि) तिन अहोरात्रिका आयु अग्निकायका (तिपल्लाऊ) तीन पल्योपका आयु (नरतिरि) मनुष्य और तिर्यचका (सुरनिरयसागरतितीसा) देवता और नारकका उत्कृष्ट आयु तेतीस सागरोपमका होते है (वंतरपल्ल) व्यंतरका आयु एक पल्योपमका (जोइस) और ज्योतिषी देवोका आयु (वरिसलक्खाहिअपलिअं) एकलाख वर्ष अधिक एक पल्योपमका होते है ॥ २६ ॥

द्रिको पाच (छक्क) छे (चउरिंदिसु) चौरिन्द्रिको (थावरेतियग) और स्थावरको तीन उपयोग होते है ॥ इति चोवीश दंडके उपयोगद्वार १९ ॥ २१ ॥

॥ अथ उत्पति और चवनद्वार कहते है ॥

॥ संखमसखासमए गप्भयतिरिविगलनारयसुराय
मणुआनियमासखा वणऽणताथावरअसखा ॥ २३ ॥

॥ (सखमसखासमए) एक समयके विषे सख्याता और असख्याता (गप्भयतिरि) गर्भजतिर्यंच (विगलनारयसुराय) विकलेंद्रि नारक और देवता उत्पन्न होते हे (मणुआनियमासखा) मनुष्योंनिश्चारके सख्याता उत्पन्न होते है (वणऽणता) वनस्पतिकाय अनंता (थावरअसखा) ओर स्थावर असख्याता उत्पन्न होते हे ॥ २२ ॥

॥ असन्निनरअसखा जहउववाएतहेवचवणेवि
बावीससगतिदसवास सहस्सउक्किठ्ठपुढवाई ॥ २४ ॥

॥ (असन्निनरअसखा) असन्नी मनुष्यो असख्याता उत्पन्न होते हे (जहउववाए)

॥ अब योगद्वार कहते है ॥

॥ इक्कारससुरनिरए तिरिएसुतेरपनरमणुएसु
विगलेचउपणवाए जोगतियथावरेहोई ॥ २१ ॥

॥ (**इक्कारससुरनिरए**) देवता और नारकको इग्यारे योग होते हे (**तिरिएसुतेर**) तिर्यंचको तेरह (**पनरमणुएसु**) और मनुष्यको पन्द्रेही योग होते हे (**विगलेचउ**) विकलेंद्रिको चार (**पणवाए**) वाउकायको पाच (**जोगतियथावरेहोइ**) और स्थावरको तीन योग होते है ॥ इति चोवीश दंडके योगद्वार १४ ॥ २१ ॥

॥ अब उपयोगद्वार कहत हे ॥

॥ उवओगामणुएसु बारसनवनिरयतिरियदेवेसु
विगलदुगेपणछक्क चउरिंदिसुथावरेतियगं ॥ २२ ॥

॥ (**उवओगामणुएसु**) मनुष्यके विषे उपयोग (**बारस**) बारहही होते है (**नवनिरयतिरियदेवेसु**) नारक तिर्यंच और देवोंको नव उपयोग होते है (**विगलदुगेपण**) दो विकले-

॥ **(थावर)** पाच स्थावरको **(बितिसुअचरकु)** तथा दोइन्द्रि और तेइन्द्रिको एक अच खुदशर्नहीं होते है **(चउरिंदिसु)** चउरिंद्रिको **(तदुगसुण्भणिय)** चक्षु तथा अचक्षु ऐसे दो दर्शन सूत्रमे कहा है **(मणुआचउदसणिणो)** और मनुष्यके विषे तो चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन अवधिदर्शन और केवल दर्शन ऐमे चारोहीहोत है **(सेसेसुतिगतिगभणिय)** बाकीके सब दंडकोके विषे केवल वर्जके तिनतिन दर्शन कहा है ॥ इति चोवीश दंडके ११-१२-१३ दर्शनद्वार ॥ १९ ॥

॥ अब ज्ञान अज्ञानद्वार कहते हे ॥

॥ अन्नाणनाणतियतिय सुरतिरिनिरएथिरेअनाणदुग
नाणान्नाणदुविगले मणुएपणनाणतिअनाणा ॥ २० ॥

॥ **(अन्नाणनाणतियतिय)** तीन अज्ञान और तीन ज्ञान **(सुरतिरिनिरए)** देवताको तथा तिर्यंच और नारकको होते हे **(थिरेअनाणदुग)** और स्थावरको मति तथा श्रुत ऐसे दो अज्ञान होत हे **(नाणान्नाणदुविगले)** दो ज्ञान तथा दो अज्ञान विकलेंद्रिको होत हे **(मणुएपणनाणतिअनाणा)** और मनुष्यको तो पाच ज्ञान और तीन अज्ञान एसे आठोही होते है ॥ इति चौवीश दंडके ज्ञान अज्ञानद्वार १३ ॥ २० ॥

॥ पणगभ्पतिरिसुरेसु नारयवाऊसुचउरतियसेसे
विगलदुदिट्ठीथावर मिच्छत्तिसेसतियदिट्ठी ॥ १८ ॥

॥ **(पणगभ्भतिरिसुरेसु)** परन्तु गर्भज तिर्यंच और तेरह देवोको प्रथमकी पाच समुद्घात होति है **(नारयवाऊसु)** नारक और वाउकायके विषे प्रथमकी **(चउर)** चार समुद्घात है **(तिय-सेसे)** और शेषके सात दडकोके विषे प्रथमकी तीन समुद्घात होते है ॥ इति चोवीस दडके नवमा समुद्घात द्वार ॥

॥ १० अब दृष्टिद्वार कहते है ॥

(विगलदुदिट्ठी) विकलेन्द्रिको दो दृष्टि होती है एक सम्यक् और दुसरी मिथ्यादृष्टि ऐसे दो **(थावर)** पाच स्थावरको **(मिच्छत्ति)** एक मिथ्यादृष्टिही होति है **(सेसतियदिट्ठी)** शेष रहे हुये जो सोलह दडक उसके विषे सम्यक् मिश्र और मिथ्यात्व यह तीन दृष्टि होति है ॥ इति चौविश दडके दशमा दृष्टि द्वार ॥

॥ अब दर्शनद्वार कहते है ॥

॥ थावरावितिसुअचरकु चउरिंदिसुतदुगसुएभणिय
मणुआचउदंसाणिणो सेसेसुतिगतिगभणिय ॥ १९ ॥

॥ अब एक गाथसें सातोही समुद्घातका नाम देखलाते है ॥

॥ वेयणकसायमरणे वेउवियतेयएयआहारे
केवलियसमुग्घाया सत्तइमेहुतिसन्नीण ॥ १६ ॥

॥ (वेयण) वेदना (कसाय) कषाय (मरणे) और मरण (वेउव्विय) वैक्रिय (तेयएय) तेजस और (आहारे) आहारक (केवलियसमुग्घाय) केवली समुद्घात (सत्तइमेहुतिसन्नीण) इस प्रकारसें सातोही समुद्घात सन्नि-पचंद्री मनुष्यको होति है ॥१६॥

॥ एगिंदियाणकेवलि तेउआहारगविणाउचत्तारि
तेवेउव्वियवज्जा विगलासन्नीणतेचेव ॥ १७ ॥

॥ (एगिंदियाणकेवलि) एकेन्द्रीको केवली (तेउआहारगविणाउचत्तारि) तथा तेजस और आहारक इस तिनुको वरजके बाकीकी चार समुद्घात एकेंद्रिको होति है (तेवेउव्वियवज्जा) वह तिन और वेक्रिय यह चार वरजके (विगलासन्नीण) तीन समुद्घात विकलेंद्रि और असन्नीको होति हे (तेचेव) निश्चे करके ॥ १७ ॥

॥ (**सव्वेविचउकसाया**) सर्व दडकोके विषे चारोही कषाय होते हे इति चोवीश दडके छेठा कषायद्वार ॥

॥ अब सप्तम लेशाद्वार कहते है ॥

(**लेसछक्कगब्भतिरियमणुएसु**) छेहीलेसा गर्भज तिर्यच और मनुष्यकोहोते है (**नारयतेऊवाऊ**) और नारक तेउकाय वाउकाय (**विगला**) और तिनविकलेंद्रि एसे छे दडकोके विषे प्रथमकी तीन लेस्या होति है (**वेमाणियतिलेसा**) और वेमाणिक देवोंको अन्तकी तीन लेस्या होतिहै ॥१४॥

॥ जोइसियतेउलेसा सेसासव्वेविहुतिचउलेसा इदियदारसुगम मणुआणंसत्तसमुग्घाया ॥ १५ ॥

॥ (**जोइसियतेउलेसा**) और ज्योतिषीको एक तेजोलेस्याही होति है (**सेसासव्वेविहुंतिचउलेसा**) और शेष सब दडकोके विषे कृष्णादि चार लेस्या है इति चोवीस दडके लेस्याद्वार ७ (**इदियदारसुगम**) और इन्द्रियद्वार तो सुगम है ८ ॥

॥ अब समुद्घातद्वार कहते है ॥ ९

(**मणुआणंसत्तसमुग्घाया**) मनुष्यको सातोही समुदघात होति है ॥ १५ ॥

(**सवेसुरायचउरसा**) सब देवोका समचोरस सस्थान है (**नरतिरियछसठाणा**) मनुष्य और तिर्यंचको छेही सस्थान होते है (**हुडाविगलिंदिनेरईया**) विकलेंद्रि और नारकको एक हुडक ही सस्थान होते है ॥ १२ ॥

॥ नाणाविहधयसूई बुब्बुहवणवाउतेउअपकाया
पुढवीमसूरचदा–कारासठाणओभणिया ॥ १३ ॥

॥ (**नाणाविह**) नाना प्रकारका (**धय**) ध्वजाके आकारे सस्थान (**सूई**) सुईके आकारे (**बुब्बुह**) जलके बुद्बुदाके आकारे (**वणवाउतेउअपकाया**) अनुक्रमसें वनस्पतिकाय वाउकाय तेउकाय और अपकायका है (**पुढवीमसूरचदाकारा**) और पृथ्वीकायका मसूरकीदाल अथवा अर्धचन्द्रके आकारे (**सठाणओभणिया**) इस प्रकारसें चोवीस दडके पचम सस्थानद्वार कहा ॥ १३ ॥

॥ अब छठा कषायद्वार कहते है ॥

॥ सवेविचउकसाया लेसछक्कंगभ्भतिरियमणुएसु
नारयतेऊवाऊ विगलावेमाणियतिलेसा ॥ १४ ॥

॥ थावरसुरनेरइया असघयणायविगलछेवठ्ठा
सघयणछकगब्भय नरतिरिएसुसुणेयव ॥ ११ ॥

॥ (थावरसुरनेरइया) पाच स्थावर तेरे देवता और एक नारक ऐसे सब मिलके उगणीसदडकोके विषे (असघयणाय) सघयण नही होते है (विगलछेवठ्ठा) और तीन विकलेंद्रिको एक छेवठा होते है (सघयणछक्कगब्भय) छे सघयण गर्भजको (नरतिरिएसुविसुणेयवं) मनुष्य और तिर्यचको जान लेना ॥ इति चौविस दडक सघयण द्वार ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अब चोथा सज्ञाद्वार कहते है ॥

॥ सवेसिंचउदहवा सन्नासवेसुरायचउरसा
नरतिरियछसठणा हुडाविगलिदिनेरइया ॥ १२ ॥

॥ (सवेसिचउदहवा) सब दडकोके विषे चार दश तथा सोले (सन्ना) सज्ञा होते है ॥ इति चोवीश दडके चतुर्थ सज्ञाद्वार ॥

॥ अब पचमा सस्थानद्वार कहते हे ॥

(सव्वेसुरायचउरसा) सब देवोका समचोरस सस्थान हे **(नरतिरियछसठाणा)** मनुष्य और तिर्यचको छेही सस्थान होते हे **(हुडाविगलिदिनेरईया)** विगलेंद्रि और नारकको एक हुडक ही सस्थान होते है ॥ १२ ॥

॥ नाणाविहधयसूई बुब्बुहवणवाउतेउअपकाया
पुढवीमसूरचदा–कारासठाणओभणिया ॥ १३ ॥

॥ **(नाणाविह)** नाना प्रकारका **(धय)** ध्वजाके आकारे सस्थान **(सूई)** सुईके आकारे **(बुब्बुह)** जलके बुदबुदाके आकारे **(वणवाउतेउअपकाया)** अनुक्रमसें वनस्पतिकाय वाउकाय तेउकाय और अपकायका हे **(पुढवीमसूरचदाकारा)** और पृथ्वीकायका मसूरकीदाळ अथवा अर्धचन्द्रके आकारे **(सठाणओभणिया)** इस प्रकारसें चोवीश दडके पचम सस्थानद्वार कहा ॥ १३ ॥

॥ अब छठा कषायद्वार कहते है ॥

॥ सव्वेविचउकसाया लेसछक्कगब्भतिरियमणुएसु
नारयतेउवाऊ विगलावेमाणियतिलेसा ॥ १४ ॥

॥ थावरसुरनेरइया असघयणायविगलछेवट्ठा
सघयणछक्कगभ्भय नरतिरिएसुमुणेयव्वं ॥ ११ ॥

॥ (**थावरसुरनेरइया**) पाच स्थावर तेरे देवता और एक नारक ऐसे सब मिल्के उगणीसदडकोके विषे (**असघयणाय**) सघयण नही होते है (**विगलछेवट्ठा**) और तीन विकलेंद्रिको एक छेवठा होते है (**संघयणछक्कगभ्भय**) छे सघयण गर्भजको (**नरतिरिएसुविसुणेयव्वं**) मनुष्य और तिर्यंचको जान लेना ॥ इति चौविस दडक सघयण द्वार ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अब चोथा सन्नाद्वार कहवे है ॥

॥ सव्वेसिचउदहवा सन्नासव्वेसुरायचउरसा
नरतिरियछसठणा हुडाविगलिदिनेरइया ॥ १२ ॥

॥ (**सव्वेसिचउदहवा**) सब दडकोके विषे चार दश तथा सोले (**सन्ना**) सन्ना होते है ॥ इति चोवीश दडके चतुर्थ सन्नाद्वार ॥

॥ अब पचमा सम्थानद्वार कहते है ॥

॥ (देवनरअहियलक्ख) देवताका वैक्रिय शरीर एक लाख जोजनका होता है और मनुष्यका वैक्रिय शरीर एक लाख जोजनमें कुछ अधिक होता हे (तिरियाणनवयजोयणसयाइ) और तिर्यचका वैक्रिय शरीर नवस जोजनका (दुगुणतुनारयाण) और नारकका शरीर मूलसें दुना होते है (भणियवेउव्विय शरीर) इसप्रकारे वैक्रिय शरीरका प्रमाण कहा ॥ ९ ॥

॥ अब एक वैक्रिय शरीर कितनो काल रहे वह देखलाते हे ॥

॥ अतमुहुत्तनिरये मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु
देवसुअद्धमासो उक्कोसविउव्वणाकालो ॥ १० ॥

॥ **(अतमुहुत्तनिरये)** नारकके वैक्रिय शरीरका काल अतर्मूहूर्त्तका होते है फेर दुसरा करणा पडता है **(मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु)** मनुष्य और तिर्यचके वैक्रिय शरीरका काल मान चार मुहूर्त्तका हे **(देवेसुअद्धमासो)** और देवोके वैक्रिय शरीरका काल एक पक्षदिनका **(उक्कोसवि-उव्वणाकालो)** इस प्रकारसें वैक्रिय शरीरका उत्कृष्टकालमान कहा है ॥ इति शरीर अवगाहना द्वार २ ॥ १० ॥ ॥७५॥

॥ अब तीसरा सघयणद्वार कहत है ॥

॥ गप्भतिरिसहस्सजोयण वणस्सईअहियजोयणसहस्सं
नरतेइदितिगाऊ वेइंदियजोयणेवार ॥ ७ ॥

॥ (**गप्भतिरिसहस्सजोयण**) गर्भजतिर्यंचका शरीर एक हजार जोजनका है (**वणस्सईअहियजोयणसहस्स**) और वनस्पतिकायका शरीर एक हजार जोजनसें कुछ अधिक होते है (**नरतेइंदितिगाऊ**) मनुष्य और तेइंद्रिका शरीर तिन गाउका होते है (**बेइंदियजोयणेवार**) और दोइंद्रिका शरीर बारह जोजनका है ॥ ७ ॥

॥ जोयणमेगचउरिंदि देहमुच्चत्तणसुएभणिय
वेउव्वियदेहपुण अगुलसखसमारभे ॥ ८ ॥

॥ (**जोयणमेगचउरिंदि**) एक जोजन चौरद्रिका (**देहमुच्चत्तणसुएभणिय**) शरीरका उचपणा सुत्रमे कहा है (**वेउव्वियदेहपुण**) फेर वैक्रिय शरीरका अनुमान कहते है (**अगुलसखसमारभे**) आरभतीवेर सदेवअगुलके सख्यातमे भागे होवे है ॥ ८ ॥

॥ देवनरअहियलक्ख तिरियाणनवयजोयणसयाइ
दुगुणतुनारयाण भणियवेउव्वियसरीर ॥ ९ ॥

॥ (देवनरअहियलक्ख) देवताका वैक्रिय शरीर एक लाख जोजनका होता है और मनुष्यका वैक्रिय शरीर एक लाख जोजनमें कुछ अधिक होता है (तिरियाणनवयजोयणसयाइ) और तिर्यंचका वैक्रिय शरीर नवसे जोजनका (दुगुणतुनारयाण) और नारकका शरीर मूलमें दुना होते है (भणियवेउन्विय शरीर) इसप्रकारे वैक्रिय शरीरका प्रमाण कहा ॥ ९ ॥

॥ अब एक वैक्रिय शरीर कितनो काल रहे वह दिखलाते है ॥

॥ अतमुहुत्तनिरये मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु
देवेसुअद्धमासो उक्कोसविउव्वणाकालो ॥ १० ॥

॥ (अतमुहुत्तनिरये) नारकके वैक्रिय शरीरका काल अतर्मूहूर्त्तका होते है फेर दुसरा करणा पडता है (मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु) मनुष्य और तिर्यंचके वैक्रिय शरीरका काल मान चार मुहूर्त्तका है (देवेसुअद्धमासो) और देवोंके वैक्रिय शरीरका काल एक पक्षदिनका (उक्कोसवि-उव्वणाकालो) इस प्रकारसें वैक्रिय शरीरका उत्कृष्टकालमान कहा है ॥ इति शरीर अवगाहना द्वार २ ॥ १० ॥

॥ अब तीसरा संघयणद्वार कहत है ॥

॥ गब्भतिरिसहस्सजोयण वणस्सईअहियजोयणसहस्सं
नरतेइदितिगाऊ वेइंदियजोयणेबार ॥ ७ ॥

॥ (**गब्भतिरिसहस्सजोयण**) गर्भजतिर्यंचका शरीर एक हजार जोजनका है (**वणस्सईअहियजोयणसहस्स**) और वनस्पतिकायका शरीर एक हजार जोजनसें कुछ अधिक होते हे (**नरतेइंदितिगाऊ**) मनुष्य और तेइद्रिका शरीर तिन गाउका होते है (**वेइंदियजोयणेबार**) और दोइद्रिका शरीर बारह जोजनका है ॥ ७ ॥

॥ जोयणमेगचउरिदि देहमुच्चत्तणसुएभणिय
वेउव्वियदेहपुण अंगुलसंखसमारंभे ॥ ८ ॥

॥ (**जोयणमेगचउरिदि**) एक जोजन चौरिद्रिका (**देहमुच्चत्तणसुएभणिय**) शरीरका उचपणा सूत्रमे कहा हे (**वेउव्वियदेहपुण**) फेर वैक्रिय शरीरका अनुमान कहते है (**अंगुलसंखसमारंभे**) आरंभतीवेर सदेवअंगुलके संख्यातमे भागे होते हे ॥ ८ ॥

॥ देवनरअहियलक्ख तिरियाणनवयजोयणसयाइ
दुगुणंतुनारयाण भणियवेउव्वियसरीर ॥ ९ ॥

॥ (चउगब्भतिरियवाउसु) गर्भजतिर्यंचको और वाउकायको औदारिक वैक्रिय तेजस और कर्मण ऐसे चार शरीर होते है (मणुआणपंच) ओर मनुष्यको पाचोही शरीर होते है (सेसतिसरीरा) बाकीके एकादश दंडकोके विषे तिन तिन शरीर हे इति १ शरीरद्वार ॥ ५ ॥

॥ अब दुसरा अवगाहनाद्वार कहते है ॥

(थावरचउगेदुहओ) वनस्पतिवरजके चार स्थावरको जघन्य और उत्कृष्ट ऐसे दो प्रकारे (अगुलअसखभागतणु) अगुलके असख्यातमें भागे शरीरकी अवगाहना होति है ॥ ५ ॥

॥ सव्वेसिंपिजहन्ना साहावियअगुलस्सअसखसो
उक्कोसपणसयधणू नेरइयासत्तहत्थसुरा ॥ ६ ॥

॥ (सव्वेसिंपिजहन्ना) (चार स्थावरवरजके) सब दंडकोके विषे जघन्यसें (साहावियअंगुलस्सअसखसो) स्वाभाविक अगुलके असख्यातमे भागे शरीर होते है (उक्कोसपणसयधणू) और उत्कृष्टी अवगाहना पाचसें धनुष्यकी (नेरइया) नारकीके जीवोंकी है (सत्तहत्थसुरा) और देवोंका उत्कृष्टा शरीरमान सात हाथका होता है ॥ ६ ॥

॥ दिठीदंसणनाणे जोगुवओगोववायचवणठिई
पज्जत्तिकिमाहारे सन्निगइआगईवेए ॥ ४ ॥

॥ (दिठी) दृष्टिद्वार १० (दसण) दर्शनद्वार ११ (नाणे) ज्ञानद्वार १२ अज्ञानद्वार १३ (जोगु) योगद्वार १४ (वओगो) उपयोगद्वार १५ (ववाय) उपपातद्वार १६ (चवण) च्यवनद्वार १७ (ठिइ) स्थितिद्वार १८ (पज्जत्ति) पर्याप्तिद्वार १९ (किमाहारे) किमाहारद्वार २० (सन्नि) सन्नाद्वार २१ (गई) गतिद्वार २२ (आगई) अगतिद्वार २३ (वेद) वेदद्वार २४ इति चौवीश ॥ ४ ॥

॥ अब इस चोवीश दंडकोंके विषे कुणसा कुणसा द्वार आवेगे वह देखलाते है ॥

प्रथम शरीरद्वार

॥ चउगभ्यतिरियवाउसु मणुआणपचसेसतिसरीरा
थावरचउगेदुहओ अगुलअसखभागतणू ॥ ५ ॥

॥ (**नेरइआ**) सात नारकको १ (**असुराई**) असुरादि दश भुवनपतिका १० (**पुढवाई**) पृथ्वीकायादि पाच स्थावरके ५ (**बेइंदियादओचेव**) दो इंद्रियादि विकलेंद्रिके ३ (**गब्भयतिरिय**) गर्भजतिर्यचका १ (**मणुस्सा**) गर्भज मनुष्यका १ (**वतर**) व्यतरका १ (**जोइसिय**) ज्योतिषि देवोका १ (**वेमाणि**) और वेमानिक देवोका १ ऐसे सब मिलकर चोवीश दडक समझ लेना ॥ २ ॥

॥ अब चोवीश दडकके चोवीश द्वार कहते है ॥

॥ सखित्तयरोउइमा सरीरमोगाहणायसंघयणा
सन्नासठाणकसाय लेसइंदीयदुसमुघाया ॥ ३ ॥

॥ (**सखित्तयरीउइमा**) यह सघणी सक्षेप मात्र है (**सरीर**) शरीरद्वार १ (**ओगाहणाय**) अवगाहनाद्वार २ (**सघयणा**) सघयणद्वार ३ (**सन्ना**) सज्ञाद्वार ४ (**सठाण**) सस्थानद्वार ५ (**कसाय**) कषायद्वार ६ (**लेस**) लेश्याद्वार ७ (**इंदिय**) इंद्रियद्वार ८ (**दुसमुग्घाया**) दो प्रकारे समुद्घातद्वार ९ ॥ ३ ॥

॥ ॐ आनन्दघन गुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ श्री दंडकप्रकरण मूलसहितं हिन्दी अनुवाद प्रारम्य ॥

॥ नमिउचउवीसजिणे तस्सुत्तवियारलेसदेसणओ
दडगपएहितेच्चिय थोसामिसुणेहभोभवा ॥ १ ॥

(नमिउचउवीसजिणे) चोवीशे जिनस्वोरोको नमस्कारकरके (तस्सुत्तवियारलेसदेसणओ) उसके सूत्रक विचारसे लेशमात्र कहनसे (दण्डगपएहितेच्चिय)दडगक पदवरक (थोसामिसुणेहभोभव्वा) म कहताहु सो हे भव्य तुम सुनो ॥ १ ॥

॥ निचेकी गाथास चौवीश दडकके नाम देखलाते हे ॥

॥ नेरइआअसुराई पुढवाईवेइदियादओचेव
गब्भयतिरियमणुस्सा वतरजोइसियवेमाणी ॥ २ ॥

॥ (तह) फिर तैसें ही (बुद्धबोहिगुरुबोहिया) बुद्धबोधित सिद्ध हुए वह गुर उपदेशसें १३ (एगसमयएगसिद्धाय) एक समयमें एकही सिद्ध होए (एगसमएविअ-णेगा) एक सिद्ध महावीर आदि १४ और एक समयमें अनेक (सिद्धातेणेगसिद्धाय) सिद्ध होये वह रुषभादि १५ ॥ ५९ ॥

॥ जइआइहोइपुच्छा जिणाणमग्गमिउत्तरतइया
इक्कसनिग्गोयस्स अणतभागोयसिद्धिगओ ॥ ६० ॥

॥ (जइआइहोइपुच्छा) जिस जिस समयपर भगवन्को पूछनेमें आवे (जिणा-णमग्गमिउत्तरतइया) उस उस समयपर जिनेश्वर महाराजके मार्गमें यह ही उत्तर मिलता है कि (इक्कसनिग्गोयस्सअणतभागोय) एक निगोदका अनन्तवे भागे (सिद्धिगओ) सिद्धोंमें गये हे इति श्रीमद् महायोगीन्द्र श्री आनन्दघन महाराजके चरणोंपासक ॥

॥ अध्यात्म जितमुनिविरचित हिन्दीअनुवादसहित नवतत्त्व प्रकरण समाप्तम् ॥

॥ (गिहिलिंगसिद्ध) गृहीलिंगे सिद्ध हुये (भरहो) वह भरतादि ५ (वलकलचीरीय) वल्कल चीरीयादि तापसके वेषमें जो सिद्ध हुये (अन्नलिंगम्मि) वह अन्यलिंगे सिद्ध जानना ६ (साहुसलिंगसिद्धा) साधुके वेष जो सिद्ध हुए वह स्वलिंगसिद्ध ७ (थीसिद्धाचंदणापमुहा) स्त्रीके लिंगमे जो सिद्ध हुए वह चंदन बालादि लेकर ८ ॥ ५७ ॥

॥ पुसिद्धागोयमाई गंगेयाईनपुंसयासिद्धा
पत्तेयसयबुद्धा भणियाकरकंडुकविलाई ॥ ५८ ॥

॥ (पुसिद्धागोयमाई) पुरुष लिंगे सिद्ध गौतमादि ९ (गंगेयाईनपुंसयासिद्धा) गंगेयादि जो सिद्ध हुए वह नपुंसकलिंगे सिद्धा १० (पत्तेयसयबुद्धा) प्रत्येक बुद्धसिद्ध और स्वय बुद्ध अनुक्रमसें (भणिया) कहा (करकंडु) करकंडु राजा ११ (कविलाई) और कपिल आदि कहे १२ ॥ ५८ ॥

॥ तहबुद्धबोहिगुरुबोहिया इगसमयएगसिद्धाय
एगसमएविअणेगा सिद्धातेणेगसिद्धाय ॥ ५९ ॥

॥ (जिण) जिनसिद्ध १ (अजिण) अजिनसिद्ध २ (तित्थ) तीर्थसिद्ध ३ (तित्था) अतिर्थसिद्ध ४ (गिहि) गृहीलिंगेसिद्ध ५ (अन्न) अन्यलिंगेसिद्ध ६ (स-लिंग) स्वलिंगेसिद्ध ७ (थी) स्त्रीलिंगेसिद्ध ८ (नर) पुम्पल्गिेसिद्ध ९ (नपुसा) नपुंसकलिंग सिद्ध १० (पत्तेअ) प्रत्येक बुद्धसिद्ध ११ (सयबुद्धा) स्वयंबुद्धसिद्ध १२ (बुद्धबोहि) बुद्धबोधिसिद्ध १३ (इकिकाय) एकसिद्ध १४ और अनेकसिद्ध १५ यह सिद्धके पन्द्रह भेद सक्षपस कहा फिर विवरा देखलाते है ॥ ५५ ॥

॥ जिणसिद्धाअरिहता अजिणसिद्धायपुंडरियापमुहा
गणहारितित्थसिद्धा अतित्थसिद्धायमरुदेवी ॥ ५६ ॥

॥ (जिणसिद्धा) तीर्थंकर होके मोक्ष गये वह तीर्थंकरसिद्ध (अरिहता) ऋषभादि अरिहतसिद्ध १ (अजिणसिद्धायपुंडरियापमुहा) अजिनसिद्ध सामान्य केवली पुंडरिक गणधर आदि २ (गणहारितित्थसिद्धा) गण र गौतमादि तीर्थ सिद्ध ३ (अतित्थसिद्धाय-मरुदेवी) अतीर्थसिद्ध वह मरुदेवी ४ ॥ ५६ ॥

॥ गिहिलिगसिद्धभरहो वलकलचीरीयअन्नलिगम्मि
साहुसलिगसिद्धा थीसिद्धाचंदणापमुहा ॥ ५७ ॥

हुआ हो जिसको (**सम्मत्त**) सम्यक् (**तेसिं**) तिस जीवको (**अवड्ढ**) अर्ध (**पुग्गल-परिअट्टो**) पुद्गल परावर्तनक उसको परिभ्रमण करना होगा (**चेव**) निश्चकरके (**ससारो**) समारमें बाद मोक्षमें जावेंगे ॥ ५३ ॥

॥ उस्सप्पिणीअणतापुग्गलपरिअट्ठओ मुणेअव्वो
तेणतातीअद्धाअणागयद्धाअणतगुणा ॥ ५४ ॥

॥ (**उस्सप्पिणीअणता**) अनन्ती उत्सर्पिणी और अनन्ती अवसर्पिणी जाने पर (**पुग्गलपरिअट्ठओमुणेअव्वो**) एक पुद्गल परावर्त्तन होत है (**तेणतात्तीअद्धा**) तेसा अनन्ता पुद्गल परावर्त्तन अतितकाले हो चुक (**अणागयद्धाअणतगुणा**) और अनागतकाल अनन्तगुणा आगे जावेंगे ॥ ५४ ॥

॥ अब सिद्धाक पन्द्रह भेद कहते है ॥

॥ जिणअजिणतित्थतित्था गिहिअन्नसलिंगथीनरनंपुसा
पत्तेअसयबुद्धा बुद्धबोहिकणिकाय ॥ ५५ ॥

॥ (जीवाइ) जीवादि लेकर (नवपयत्थे) नव पदार्थको (जोजाणइ) जो जीव जाणते हे (तस्सहोइसम्मत्त) उस जीवको अवश्यही सम्यक्त हो (भावेणसद्दहतो) और भावसें जो शुद्ध है तो (आयाणमाणेवि) अजान जीवोको भी (सम्मत्त) सम्यक् प्राप्ति हो ॥ ५१ ॥

॥ सव्वाइजिणेसरभासिआइ वयणाईनन्नहाहुति
इअबुद्धीजस्समणे सम्मत्तनिच्चलतस्स ॥ ५२ ॥

॥ (सव्वाइ) सब प्रकारसें (जिणेसरभासिआइ) जिनेश्वर महाराजके कहे हुए (वयणाई) वचन (नन्नहाहुति) अन्यथा नही है लेकीन सत्य है (एअबुद्धीजस्समणे) ऐसी बुद्धि जिनको हो (सम्मत्तनिच्चलतस्स) उस प्राणीको निश्चय सम्यक् हो ॥ ५२ ॥

॥ अतोमुहुत्तमित्तपि फासिअहुज्जजेहिंसम्मत्त
तेसिअवढ्ढपुग्गल परिअट्टोचेवससारो ॥ ५३ ॥

॥ (अतोमुहूत्तमित्तपि) एक अन्तर मुहुर्त्त मात्रभी (फासिअहुज्जजेहि) स्पर्श

केवलज्ञान (खइए) क्षायिक (भाव) भावे हे (परिणामी) परिणामी हे (एअपुण) यह पुन (होइजीवत्तं) जीवत्वपना हे ॥ ४९ ॥

॥ अब अल्प बहुत्वद्वार कहत हे ॥

॥ थोवानपुससिद्धा थीनरसिद्धाकमेणसखगुणा
इअमुक्खतत्तमेअ नवत्तत्तालेसओभणिआ ॥ ५० ॥

॥ (थोवा) सबसे कम (नपुस) नपुंसक (सिद्धा) सिद्ध हुवा (थी) नपुंसकसे स्त्रीसिद्ध सख्यातगुणी अधीक हे स्त्री सिद्धसे (नरसिद्धा) पुरूप सिद्ध सख्यातगुणे सिद्ध हुए (कमेणसखगुणा) अनुक्रमें सख्यातगुणा जानना (इअमुक्ख) यह मोक्षके (तत्तमेअ) तत्त्व इस प्रकारमें नव भेद कहे (नवतत्तालेसओभणिआ) इस प्रकारे नव तत्त्व सक्षेपसे कहे गये ॥ ५० ॥

॥ जीवाइनवपयत्थे जोजाणइतस्सहोइसम्मत्तं
भावेणसद्दहतो अयाणमाणेविसम्मत्त ॥ ५१ ॥

॥ फूसणाअहिआकालो इगसिद्धपडुच्चसाइओणतो

पडिवायाभावाओ सिद्धाणअतरनत्थि ॥ ४८ ॥

॥ (फूसणा) स्पर्शना सिद्ध जीवोंकी (अहिआ) अधिक है यह चौथा द्वार ४ (कालो) काल (इगसिद्धपडुच्चसाइओणतो) एक सिद्ध आश्रित सादि अनन्त स्थिति है और अनेक सिद्ध आश्रीन अनादि अनंत स्थिति है ॥ इति कालद्वार ५ (पडिवायाभावाओ) सिद्धोंके जीवोंको फिर पडनेका अभाव हे ॥ इति छठा द्वार ६ (सिद्धाणअतरनत्थि) सिद्धोके जीवोंको अंतर नही है कालकृत और क्षेत्रकृत दोनासे इति सातमा द्वार ॥ ४८ ॥

॥ अब भागद्वार कहते है ॥

॥ सव्वजियाणमणते भागेतेतेसिदसणनाण

खइएभावेपरिणामि यअपुणहोइजीवत्त ॥ ४९ ॥

॥ (सव्वजियाणमणते) सब ससारी जीवोंसे सिद्धके जीवा अनंतमे (भागे) भागे है इति आठमो द्वार ८ (तेतेसिदसणनाण) उन सिद्धोके जीवोंको केवलदर्शन और

॥ (नरगइ) मनुष्यगतिसें १ (पणिंदि) पचेन्द्रिसें २ (तस) त्रसकायसे ३ (भव) भव्यपणसें ४ (सन्नि) सनीपचेन्द्रिसें ५ (अहक्खाय) यथाख्यातचारीत्रसें ६ (खइअसम्मत्ते) क्षायकसम्यक्त्वसें ७ (मुक्खो) मोक्ष जाते है और (णाहार) अणहारीकपदसे ८ (केवलदसण) केवल दर्शनसें ९ (नाणे) और केवलज्ञानसे इन दश मार्गणा द्वारसे जीवों मोक्ष जाते है १० (नसेसेसु) परन्तु शेष मार्गणाओसें मोक्ष नही जाते ॥ ४६ ॥

॥ इति प्रथमद्वार ॥

॥ अब द्रव्यप्रमाण और क्षेत्रद्वार कहते है ॥

॥ दव्वपमाणेसिद्धाण जीवदव्वाणिहुतिणताणि

लोगस्सअसखिज्झे भागेइक्कोयसव्वेवि ॥ ४७ ॥

॥ (दव्वपमाणेसिद्धाण) सिद्धोके द्रव्यकाप्रमाण (जीवदव्वाणिहुतिणताणि) सिद्धोमे जीवद्रव्य अनता है ॥ इति दुसरा द्वार २ (लोगस्सअसखिज्जेभागे) चौदह राजलोकके असख्यातमे भागमे (इक्कोय) एक सिद्ध और (सव्वेवि) सब सिद्ध रहते है ॥ इति तीसरा द्वार ३ ॥ ४७ ॥

॥ (सत्त) मोक्ष सत्य है (सुद्ध) शुद्ध (पयत्ता) पद (विज्जत्तखकुसुमव्वनअसत्त) यह विद्यमान है परन्तु वह आकाशके कुसुमकी तरह असत्य नही है (मुक्खत्तिपयतस्सओ) यह मोक्षपदकी (परूवणा) प्ररूपणा (मग्गणाईहिं) मार्गणाद्वारको विनारसे कहते है ॥ ४४ ॥

॥ गइइंदीएकाये जोएवेएकसायनाणेय
सजमदसणलेसा भवसम्मे सन्नि आहारे ॥ ४५ ॥

(गइ) गतिमार्गणा १ (इंदीए) इंद्रिमार्गणा (काय) कायमार्गणा ३ (जोए) योगमार्गणा ४ (वेए) वेदमार्गणा ५ (कसाय) कषायमार्गणा ६ (नाणेय) ज्ञानमार्गणा ७ (सजम) संयममार्गणा ८ (दसण) दर्शनमार्गणा ९ (लेसा) लेश्यामार्गणा १० (भव) भव्यमार्गणा ११ (सम्मे) सम्यक्मार्गणा १२ (सन्नि) सनिमार्गणा १३ (आहारे) आहारमार्गणा १४ ॥ ४६ ॥

॥ अब निचेकी गाथासें जीव कितनी मार्गणासें मोक्ष जात है सो देखलात हैं ॥

॥ नरगइपणिंदितसभव सन्निअहक्खायखइअसम्मत्ते
मुक्खोणाहारकेवल दसणनाणेनसेसेसु ॥ ४६ ॥

॥ (**बारसमुहुत्तजहन्ना**) बारह मुहूर्तकी जघन्यस्थिति (**वेयणिए**) वेदनीयकर्मकी है (**अटनामगोएसु**) आठ मुहूर्तकी जघन्यस्थिति नामकर्म और गोत्रकर्मकी है (**सेसाणंतमुहुत्त**) शेष पाँच कर्मोंकी जघन्यस्थिति अन्तर मुहूर्तकी है (**एयंबंधठिईमाण**) इस प्रकारसे सब कर्मोंकी उत्कृष्टी और जघन्यसे स्थिति बंधका प्रमाण कहा ॥ ४२ ॥ इति बंधतत्त्वम् ॥

॥ अब अठारे गाथायोसे नवमा मोक्षतत्त्वका नव भेद और सिद्धोंके पन्द्रह भेद देखलाते है ॥

॥ सतपयपरूवणया दव्वपमाणचखित्तफुसणाय
कालोअअंतरभाग भावेअप्पाबहुचेव ॥ ४३ ॥

॥ (**सतपयपरूवणया**) सत्पदकी प्ररूपणाद्वार १ (**दव्वपमाण**) फिर सिद्धजीवोंके द्रव्यका प्रमाणद्वार २ (**खित्त**) क्षेत्रद्वार ३ (**फूसणाय**) सिद्धोंकी स्पर्शनाद्वार ४ (**कालोअ**) कालद्वार ५ (**अंतर**) अन्तरद्वार ६ (**भाग**) भागद्वार ७ (**भाव**) भावद्वार ८ (**अप्पाबहु**) और अल्प बहुत्वद्वार ९ (**चेव**) निश्चे यह मोक्षके नव द्वार कहे ॥ ४३ ॥

॥ प्रथम सत्पद प्ररूपणाद्वार स्वरूप देखलाते है ॥

॥ सतसुद्धपयत्ता विज्जतंखकुसुमवनअसत
मुक्खत्तिपयंतस्सओ परूवणामग्गणाईहि ॥ ४४ ॥

॥ (नाणेयदसणावरणनेअणिए) ज्ञानावरणी दर्शनावरणी वेदनी (चेव) निश्चय (अन्तराएअ) और अन्तराय इन चारो कर्मोंकी (तीसकोडाकोडी) तीस कोडाको (अयराण) सागरोपमकी (ठिईयउक्कोसा) उत्कृष्टी स्थिति कही है ॥ ४० ॥

॥ सत्तरिकोडाकोडीमोहणिए वीसनामगोएसु
तित्तीसअयराइ आउठिइवधउक्कोसा ॥ ४१ ॥

(सत्तरिकोडाकोडी) सित्तर कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति (मोहणिए) मोहनीय कर्मकी है (वीसनामगोएसु) बीस कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति नामकर्म और गोत्रकर्मकी है (तित्तीसअयराइ) तत्तीस सागरोपमकी (आउ) आयुकर्मकी (ठिइ) स्थिति कही (वधउक्कोसा) एसे सब कर्मोंकी उत्कृष्टी स्थितिका बध कहा है ॥ ४१ ॥

॥ वारसमुहुत्तजहन्ना वेयणिएअठनामगोएसु
सेसाणतमुहुत्त एयवधठिईमाणं ॥ ४२ ॥

॥ अब आठोंही कर्मोंकी जघन्यस्थिति कहते है ॥

॥ इहनाणदंसणावरण वेयमोहाउनामगोआणि
विग्घंचपणनवदु अठवीसचउतिसयदुपणविह ॥ ३९ ॥

॥ (**इहनाण**) यह ज्ञानावरणीयकर्म १ (**दसणावरण**) और दुसरा दर्शनावरणीकर्म २ (**वेयमोहाउनामगोआणि**) तीसरा वेदनीयकर्म ३ ४ मोहीनीकर्म ५ आयुकर्म ६ नामकर्म और सातमा गोत्रकर्म ७ (**विग्घ**) अंतरायकर्म ८ (**च**) यह आठ कर्म (**पण**) ज्ञानावरणीयकी उत्तर प्रकृतियों पाँच है (**नव**) और दर्शनावरणीयकी उत्तरप्रकृति नव (**दु**) वेदनीकी प्रकृति दो (**अठवीस**) मोहीनीकर्मकी उत्तर प्रकृति अठावीस (**चउ**) आयुकर्मकी उत्तर प्रकृति चार (**तिसय**) नामकर्मकी उत्तर प्रकृति एकसो तीन (**दु**) गोत्रकर्मकी उत्तर प्रकृति दो (**पण**) और अंतराय कर्मकी उत्तर प्रकृति पाच (**विह**) एसे सब कर्माकीउत्तर प्रकृति एकसें अठावन जान लेना ॥ ३९ ॥

॥ अब आठोहि कर्मांकी उत्कृष्टी स्थितिका बन्ध कहते है ॥

॥ नाणेयदसणावरण वेअणिएचेवअतराएअ
तीस कोडाकोडी अयराणठिईयउक्कोसा ॥ ४० ॥

जीवको दुख होता है ३ (मज्ज) मदराकीछाक समान मोहनीयकर्मका स्वभाव हे जैसे मदिरासें जीव बेभान होजाते हे तसही मोहनीयकर्मके उपदर्स जीव ससारमे ग्रुमाव हे यह कर्म आत्माका सम्यग्ज्ञानको और सम्यक् चारित्र गुणोको रोकते हे अर्थात् दरू देते है ४ (हड) खोडासमान आयुकर्म है जैसे खोडेमें पडे हुए चोर राजाके हुकम बिन नही निकल शगन है तैसे ही आयुकर्मके जोरसे जीव गतीसे नही निकल शगते हे ५ (चित्त) इस नामकर्मका स्वभाव चितकार जैसा हे यह कर्म आत्माके अरूपि धर्मको रोकते हे जेस चितारा अच्छा बुरा नाना प्रकारका चितामन बनाते है तसे ही यह नामकर्म आत्माको अछीबुरी गतियोंम पहुचा देत है नाना प्रकारके स्वरूपको धारण करा दते हे ६ (कुलाल) यह गोत्रकर्म कुभार जेसा हे जैसे कुभार अछे और बुरे नाना प्रकारके बरतन बनाते है तैसेही इस कर्मके उदयसें जीव ऊच निच कुलको धारण करते है ७ (भडगारीण) इस अन्तराय कर्मका स्वभाव भडारी जेसा हैं क्योंकि जब राजा किसीको दान देनके लिये भडारीको कहे परन्तु भडारी उसको देवे नही एसेही इस कर्मके उदयसे जीव दानादि नहीं कर शक्ते है ८ (जहएएसि-भावा) जैसा यह आठोही वस्तुका स्वभाव हे (कम्माण) तेसही आठोही कर्माकाभी (विज्जाण) विदमान है (तहभावा) तैसेही स्वभाव ॥ ३८ ॥

॥ अब कर्माकी मूल तथा उत्तर प्रकृती कहते है ॥

॥ पयइसहावोवुत्तो ठिईकालावहारणं
अणुभागोरसोनेओ पएसोदलसचओ ॥ ३७ ॥

॥ (पयइसहावोवुत्तो) प्रकृतिबन्ध इसलिये कर्मोका स्वभाव (ठिईकालावहारण) कर्मोकी स्थिति—कालका निश्चय वह स्थितिबन्ध २ (अणुभागो) ३ अनुभाग बन्ध सो (रसोनेओ) कर्मोका रस जानना (पएसो) ४ प्रदेशबन्ध (दलसचओ) कर्मोके दलका सचय ॥ ३७ ॥

॥ पडपडिहारसिमज्ज हडचित्तकुलालभडगारीण
जहएएसिंभावा कम्माणविजाणतहभावा ॥ ३८ ॥

॥ (पड) पाटा, जैसे किसीके आखेपर बन्धे हुए पाटेके सयोगसें कुछ नहीं देखाए देते तेसे ही ज्ञानावरणीय कर्मके स्वभावसें आत्माके अनन्त ज्ञान नही दिखलाते है १ (पडिहार) द्वारपालकेसमान दर्शनावरणीय कर्मको स्वभाव हे जैसे राजाको दर्शन चाहनेवालेको द्वारपाल रोक देते है उसी तरह आत्माके दर्शनगुणको दर्शनावरणीय कर्म रोक देते हे २ (असि) तरवार, वेदनी कर्मका स्वभाव ऐसा है कि जैसे सक्कर खरडी तलवारकी धारको चाटनेसें अच्छा लगता है मगर जब जीभ कटाजाति हे तब दुख होते है वैसीही तरह शातावेदनीसें जीवको सुख होता है और अशातावदनीसें

॥ पायच्छित्तविणओ वेयावच्चतहेवसज्झाओ
झाणउस्सग्गोविअ अभ्भितरओतवोहोइ ॥ ३५ ॥

॥ (**पायच्छित्त**) जो शुद्ध मनसें गुरु महाराजके पास आलोयणा लेना सो प्रायश्चित तप १ (**विणओ**) विनय तप २ (**वेयावच्च**) वेयावृत्य तप ३ (**तहेवसज्झाओ**) तसेही स्वाध्याय तप ४ (**झाण**) ध्यान ५ ध्यानका स्वरूप गुरुगमसें धारना ५ (**उस्सग्गोविअ**) और उत्सर्ग तप ६ (**अभ्भितरओतवोहोइ**) ऐसे छे प्रकारसें अभ्यन्तर तप कहे ॥ ३५ ॥

॥ बारसविहतवोनिज्जराय बंधोचउविगप्पोअ
पयईठिइअणुभागो पएसभेएहिनायव्वो ॥ ३६ ॥

॥ (**बारसविह**) ऐसे सब मिलकर बारह भेदे (**तवो**) तप (**निज्जराय**) निर्जराके लिये है । इति निर्जरातत्त्वम् (**बंधो**) अब बंधतत्त्व (**चउविगप्पोअ**) चार भेदे हे (**पयई**) १ प्रकृतिबंध (**ठिइ**) स्थितिबंध (**अणुभागो**) ३ अनुभाग बंध (**पएस**) और प्रदेशबंध ४ (**भेएहिं**) ऐसे चार भेदसें (**नायव्वो**) जानना ॥ ३६ ॥

॥ अब बंधतत्त्वका विशेष स्वरूप देखलाते हे ॥

॥ तत्तोअअहक्खाय खायसव्वम्मिजीवलोगम्मि

जचरिऊणसुविहिआ वच्चतिअयरामरठाण ॥ ३३ ॥

॥ (**तत्तोअअहक्खायं**) उस पीछे पाँचमा यथाख्यात चारित्र (**खायंसव्वम्मिजीवलोगम्मि**) यह चारित्र सब जीव लोगमें प्रसिद्ध है (**जचरिऊणसुविहिआ**) जिसका सेवन करनेसें साधु लोगों (**वच्चतिअयरामरंठाण**) अजरामरस्थानको पाते है ॥ ३३ ॥ इति संवर तत्त्वम् ॥

॥ अब निर्जरा तत्त्वके बारह भेद कहत है ॥

॥ अणसणमूणोअरिआ वित्तीसंखेवणरसच्चाओ

कायकिलेसोसलीण—यायवज्झोतवोहोइ ॥ ३४ ॥

॥ (**अणसण**) सर्वथा आहारका त्याग सो अनशन तप १ (**ऊणोअरिआ**) आहार कम करना सो ऊनोदरी तप २ (**वित्तीसंखेवण**) वृत्तिका संक्षेप करना सो वृत्तिसंक्षेप तप ३ (**रसच्चाओ**) विगयका त्याग करना सो रस त्याग तप ४ (**कायकिलेसो**) लोचादि जो कष्ट करना वह कायाक्लेश तप ५ (**संलीणयाय**) सब इन्द्रियोंका दमन करना वह संलीनता तप (**बज्झोतवोहोइ**) इस प्रकारसें बाह्य तपके छे भेद कहे ॥ ३४ ॥

॥ (लोगसहावो) दशमी लोकस्वरूप भावना इसमे चोदह राजलोकका स्वरूप विचारना (बोहीदुल्लहा) ११ मी सम्यक्त्वकी प्राप्ति होनी बहोत्त दुर्लभहै ऐसा बिचारना यह बोधि दुर्लभ भावना (धम्मस्स) बारहवी धर्म भावना इसमे भव्य ऐसा विचारे कि ससारसमुद्रसें पार होनेके लिये जो जिनेस्वर महाराजने कहा हुआ धर्म है उसका(साहगाअरिहा) साधक अरिहतादि मिलना दुर्लभ है (एआओ) इस प्रकारसें कही हुइ (भावणाओ) भावनाओ (भावेअव्वा) बिचारनी (पयत्तेण) प्रयत्नसें ॥ ३१ ॥

॥ अब चारित्रके पाँच भेद कहते है ॥

॥ सामाइअत्थपढमं छेओवट्ठावणभवेबीअ
परिहारविसुद्धय सुहुमतहसपरायच ॥ ३२ ॥

॥ (सामाइ) सामायिक चारित्रद्रव्य और भावसें (अत्थ) इधर (पढम) पहिले है १ (छेओवट्ठवणंभवेबीअ) छेदोपस्थापनीयचारित्र दुसरा है २ (परिहारविसुद्धीय) परिहार विशुद्धि चारित्र ३ (सुहुमतहसपरायच) फिर चोथा सुक्ष्मसपराय चारित्र ४ यह चारित्र दशमा गुणस्थानवाले मुनिको होते हो ॥ ३२ ॥

विचारना सो २ (संसारो) ससारभावना इस भावनामे भव्य ऐसा विचारे कि मेरे जीवने चौरासी लक्ष योनिमे परिभ्रमण करते अनन्तेकाल चक्र हो गये हे इस ससारमे पिता सो पुत्र और पुत्र सो पिता ऐसा उलट सुलट अनंती वेर होते हे ऐसा विचारना सो ससार भावना ३ (एगयाये) एकत्व भावना इस भावनामे भव्य ऐसा चिंतवे कि मेरा जीव अकेलाही आये है और अकेलाही जावेंगे सुखदुःख भी अकेलाही भोगेंगे ४ (अन्नत्त) अन्यत्व भावना इसमे भव्य ऐसा विचारे कि मेरा आत्मा अनन्त ज्ञानमयी हे और शरीर जड पदार्थ हे शरीर आत्मा नही है न आत्मा शरीर हे ऐसा सदैव विचारे ५ (असुइत्त) अशुचि भावना यह शरीर खून माँस हड्डी मलमूत्र आदिसे भराहुआ ऐसा जो विचारना वह अशुचित्व भावना ६ (आसव) आस्रव भावना रागद्वेष और अज्ञान मिथ्यात्व आदिक जोरसें नये नये कर्मका जो आना अर्थात् शुभाशुभका विचार वह आस्रव ७ (संवरोअ) सवर भावना शुभाशुभ विचारको छोडकर स्वसरूपमे लीन रहना अर्थात् नवीन कर्मको आने नही देना वह निश्चय सवर और अकेला अशुभ विचारोको रोकदेना सो व्यवहार सवर भावना ८ (तह) तेसही (निज्जरानवमी) नवमी निर्जरा भावना निर्जराके दो भेद है एक सकाम निर्जरा और दुसरी अकाम निर्जरा ९॥ ३० ॥

॥ लोगसहावोवोही दुल्लहाधम्मस्ससाहगाअरिहा
एआओभावणाओ भावेअव्वापयत्तेण ॥ ३१ ॥

॥ (खती) क्षमा सब प्राणीमात्रपर सम द्रष्टी रखे किन्तु यति क्रोदपर क्रोध न करे (मद्दव) मानका त्याग करना उसको मार्दव धर्म कहते हे २ (अज्जव) किशीके साथ कपट न सो आर्जव धर्म ३ (मुत्ती) निरलोभना ४ (तव) तप जो इच्छाका निरोध करना ५ (सजमे) सत्तर प्रकार सयमका आराधन करना वही समय ६ (अ) और (घोघव्वे) (सच्च) सत्यधर्म ७ (सोअ) मन आदिको पवित्र रखना वह शौच धर्म ८ (आकिंचण) बाह्य अभ्यन्तर परीग्रहका त्याग सो अकिंचन धर्म ९ (च) और (बभ) द्रव्यसें और भावसे जो मैथुनका त्याग करना वह ब्रह्मचर्य धर्म १० (जइधम्मो) एसे दश प्रकारे यति धर्म पा उसको यति कहना योग्य हैं इसमे जो विपरित हो वह यति नही समजना कुयति समजना ॥२९

॥ अब बारह भावना कहते हे ॥

॥ पढमसणिच्चमसरण ससारोएगयायअन्नत्त
असुइत्तआसवसवरोअ तहनिज्जरानवमी ॥ ३० ॥

॥ (पढममणिच्च) प्रथम अनित्यभावना इस भावनामें भव्यजीव ऐसा विचारे कि धन योवन आदि सब पदार्थ अनित्य है आत्माका मूल धर्म अविनाशी है १ (असरण) अशरण भावना कि मृत्युके समय इस जीवको ससारमें धर्म विन कोई भी शरणभूत नही है एक धर्मही शरण है ऐसा

॥ अलाभरोगतणफासा मलसक्कारपरीसहा
पन्नाअन्नाणसम्मत्त इअबावीसपरीसहा ॥ २८ ॥

चीज न मिले तोभी समता
॥ (अलाभ) लाभान्तराय कर्मके उदयसे जो मागने परभी चीज न मिले तोभी समता
रखे और विचारे कि अंतराय कर्मका उदय है सो अलाभ परिसह १५ (रोग) ज्वरादि अति रोग
आने परभी साधु चिकीत्सा करानेकी इच्छाभी न करे किन्तु सभावसे सहन करे सो रोग परिसह १६
(तणफासा) तृण स्पर्श परिसह साधुको तृण आदिको जो सथारो मिले तोभी शांत चित्तसें वेदना
सहन करे १७ (मल) मलपरिसह इस लिये शरीरपर जो पसीनेसें मेल चढ जावे तोभी स्नानादिकी
इच्छा न करे १८ (सक्कारपरीसहा) सत्कारपरिसह, उत्कर्षमें न आवे, स्तुति करणेपर समचित्त
रखे १९ (पन्ना) प्रज्ञा इस लिये बडी विद्वता होनेपरभी मुनि घमण्ड न रखे २० (अन्नाण)
अज्ञान परिसह अज्ञानके उदयसे मुनि दुर्ध्यान न करे २१ (सम्मत्त) सम्यक्त्वपरिसह (इअ)
इस प्रकारसें (बावीसपरीसहा) बावीशपरिसह जाणना २२ ॥ २८ ॥

॥ अब इसगाथासें दश प्रकारे यति धर्म कहते हे ॥

॥ खतीमद्दवअज्जव मुत्तीतवसजमेअबोधव्वे
सच्चसोअंआकिंचणंच बंभचजइधम्मो ॥ २९ ॥

॥ (आणवणि) जो जीव अजीवको ज्ञान लेजानसें क्रिया लगे उसको आनयनिकी क्रिया कहते है १७ (विआरणिआ) जो जीव अजीवको विदारनसें विदारणि लगेसो क्रिया १८ (अणभोगा) अना उपयोगसे जो चीज रखम उठाना रखना तथा हलन चलनसे जो क्रिया लगे उसे अनाभोगीकी क्रिया कहते १९ (अणवकन्नपच्चइआ) इस लोक तथा परलोकसें जो विरुद्ध आचरण करना उसे अनवकांक्षाप्रत्ययीकी क्रिया कहते हे २० (अन्नापओग) दुसरी प्रायोगिकी क्रिया २१ (समुदाण) समुदायकी क्रिया २२ (पिज्ज) माया और लोभ करनमें जो क्रिया लगे उसे प्रेमाकी क्रिया कहत ह २३ (दोसे) क्रोध और मानसें जो क्रिया लगे उसे द्वेषीकी क्रिया कहत है २४ (इरिआवहिआ) हलन चलनसें शरीरके व्यापारसें जो क्रिया लगे उसे इर्यापथिकीकी क्रिया कहते है २५ सो क्रिया अप्रमत्त साधु तथा सयोगी केवलीको भी लगति हैं ॥ २४ ॥ इति आश्रवतत्वम् ॥

॥ अब संवरका सत्तावन भेद कहत है ॥

॥ समिईगुत्तिपरीसह जइधम्मोभावणाचरित्ताणि
पणतिदुवीसदसबारस्स पचभेएहिसगवन्ना ॥ २५ ॥

॥ (समिइ) सुमति (गुत्ति) गुप्ति (परीसह) परिसह (जइधम्मो) यतिधर्म

॥ मिच्छादंसणवत्ती अपच्चक्खाणायदिट्ठिपुट्ठिअ
पाडुच्चिअसामंतो–वणीअनेसत्थिसाहत्थि ॥ २२ ॥

॥ (मिच्छादसणवत्तो) जिनेद्रके सिद्धातसे जो विपरीत एकान्तक्रियारुची आतम ज्ञानसे हिन बहिरात्मा सम्यक् हिन और दृष्टीरागी जिसको सत्यासत्यका निरणे नही सो मिथ्या दर्शनकी क्रिया ९ (अपच्चक्खाणाय) व्रतपचखान नही करनेसें जो क्रिया लगती है वह अप्रत्याख्यानिकी क्रिया १० (दिट्ठि) जो अशुभ दृष्टीसें देखना सो दृष्टीकी क्रिया ११ (पुट्ठिअ) जो रागादिस कलुषितचित्ते स्त्री आदिके अगका स्पर्श करना सो सृष्टीकी क्रिया १२ (पाडुच्चिअ) जो अपना मनसे स्वपरका बुरा विचारना सो १३ (सामतोवणीअ) अपना अश्व प्रमुखकी प्रशसासे हर्ष करना सो अथवा दुध दही घी आदिके भाजन खुला रखनेसें उसम जो त्रस आदि जीव पडकर मरे उससें लगे सो सामतोपनिपातीकी क्रिया १४ (नेसत्थि) नैसृष्टिकी क्रिया १५ (साहत्थि) स्वहस्तिकी क्रिया १६ ॥ २२ ॥

॥ आणवणिविआरणिआ अणभोगाअणवकखपच्चइआ
अन्नापओगसमुदा–णपिज्जदोसेरिआवहिआ ॥ २४ ॥

॥ (इंदिअ) इन्द्रियो पाच (कसाय) क्रोधादि कषाय चार (अव्वय) प्राणातीपातादि अव्रत पाँच (जोगा) मनादि योग तीन (पच) पाँच (चउ) चार (पच) पाँच (तिन्नी) तीन (कमा) अनुक्रमसें जान लेना (किरिआओपणवीस) क्रिया पचीश (इमाउताओअणुक्कमसो) यह पचीस क्रियाको अनुक्रमसें कहत है ॥ २१ ॥

॥ काइयअहिगरणीआ पाउसिआपारितावणीकिरिया पाणाइवायारंभिअ परिग्गहियामायवत्तीय ॥ २२ ॥

॥ (काइय) कायाको अजतनासें वरतावनासो कायिकि क्रिया १ (अहिगरणीआ) जिस क्रियासें जीव नरकादिकका अधिकारि हो उसको अधिकरणिकी क्रिया कहते है जेसे कि शस्त्रआदिसें जीवोकी हत्या करना (पाउसिआ) जीव अजीवसें जो द्वेष करना वह प्राद्वेषिकी क्रिया ३ (पारितावणीकिरिया) अपने जीवको या दुसरा जीवाको तक्लीफ पहुचाना यह पारितापनिकी क्रिया ४ (पाणाइवाए)जो किसी जीवका प्राणोसे रहित करना वह प्राणातिपातिकी क्रिया ५ (आरंभिअ) जो खेति आदि आरंभका काम करना सो आरंभिकी क्रिया ६ (परिग्गहिया) जो परिग्रह रखना या परिग्रहे पर ममत्व रखना सो परिग्रहिकी क्रिया ७ (मायवत्तीअ) जो माया-कपटसें किसीको ठगना सो मायाप्रत्ययिकी क्रिया ८ ॥ २२ ॥

॥ थावरसुहुमअपज्ज साहारणमथिर मसुभदुभगाणि
दुस्सरणाइज्जजस थावरदसगविवज्जत्थ ॥ २० ॥

॥ (**थावर**) स्थावर नामकर्म १ (**सुहुम**) सुक्ष्म नामकर्म २ (**अपज्ज**) अजर्याप्ति नामकर्म ३ (**साहारण**) साधारण नामकर्म ४ (**अथिरं**) अस्थिर नामकर्म ५ (**असुभ**) अशुभ नामकर्म ६ (**दुभगाणि**) दुर्भाग्य नामकर्म ७ (**दुस्सर**) दु स्वर नामकर्म जो गधेकी तरह भुकना ८ (**अणाइज्ज**) अनादेय नामकर्म ९ (**अजस**) अपयश नामकर्म १० (**थावरदसगवियज्जत्थ**) यह स्थावरको दशको त्रसम विप्परित जान लेना ॥२०॥ इतिपापतत्वम्

॥ अब आश्रव तत्त्वके बयालीस भेद देखलाते है ॥

॥ इंदिअकसायअव्वय जोगापंचचउपचतिन्नीकमा
किरिआओपणवीस इमाउताओअणुक्कमसो ॥ २१ ॥

॥ अब पुद्गलका लक्षण कहते है ॥

अरति २ शोक ४ भय ५ दुगञ ६ स्त्रीवद ७ पुरुषवेद ८ नपुंसकवेद ९ पूर्वके सोल कषाय और यह नव नोकशाय सब मील २५ तथा पूर्वके २५ सब मिल साइठ (तिरियदुग) और तिर्यचद्विक इस लिये तिर्यंचगति ६१ और तिर्यंचानुपूर्वी ६२ ॥ १८ ॥

॥ इगवितिचउजाईओ कुखगइउवघायहुतिपावस्स

अपसत्थवणचउ अपढमसघयणसठाणा॥ १९ ॥

॥ (**इग**) एकेन्द्रिजाति (**बि**) दोइन्द्रिजाति (**ति**) तेरिन्द्रीजाति (**चउ**) और चोरिन्द्रिजाति (**जाईओ**) ऐसे चार जाति नामकर्म यह सब मिलके ऊसठ (**कुखगइ**) अशुभ विहायोगति नामकर्म इस नामकर्मसें जीव गधेकी नाइ चले सो ६७ (**उवघाय**) उपघात नामकर्म ६८ (**हुतिपावस्स**) यह सब पापके भेद है (**अपसत्थवणचउ**) अशुभ वर्णादि चार ७२ (**अपढमसघयणसठाणा**) प्रथमका सघयनको छोडकर ऋषभनाराच १ नाराच २ अर्धनाराच ३ कीलीका ४ और सेवठा यह पाच सघेयन और प्रथमका सस्थान छोडकर न्यग्रोध १ सादि २ कुब्ज ३ वामन ४ और हुडक यह पाच सस्थान सब मिलकर पापतत्वका न्यासी भेद हुआ॥ १९ ॥

॥ अब स्थावरका दशका कहते है ॥

॥ अब पाप तत्त्वके बयासी भेद कहते है ॥

॥ नाणतरायदसग नववीयेनीयसायमिच्छत्त
थावरदसनरयतिगं कसायपणवीसतिरियदुग ॥ १८ ॥

॥ (**नाण**) पाँच ज्ञानावरणी मतिज्ञानावरणी १ श्रुतज्ञानावरणी २ अवधिज्ञानावरणी ३ मन पर्यंनज्ञानावरणी ४ और केवल ज्ञानावरणी ऐसे पाँच (**अतराय**) अ तराय दानान्तराय १ लाभान्तराय २ भोगा तराय ३ उपभोगा तराय ४ और वीर्यान्तराय यह पाच अन्तराय (**दसग**) ऐसे दश भेद कहे (**नववीये**) और नव दुसरा दर्शनावरणी कर्मके निद्रा १ निंद्रानिंद्रा २ प्रचला ३ प्रचलाप्रचला ४ थिणद्धी ५ चक्षुदर्शनावरणी ६ अचक्षुदर्शनावरणी ७ अवधीदर्शनावरणी ८ और केवलदर्शनावरणी ९ ऐसे नव और पूर्वकादशमिलकर ओगुणीस (**नीच**) निचगोत्र २० (**असाय**) असातावेदनीकर्म २१ (**मिच्छत्त**) मिथ्यात्व मोहनीनामकर्म २२ (**थावर**) स्थावरको (**दस**) दशाको इस दशकेका भेद आगे कहगे ३२ (**नरयतिग**) नरकत्रिक नरकगती नरकानुपूर्वी और नरक आयु ऐसे तीन ३५ (**कसायपणवीस**) कशाय पचीस सो देखलाते हे अन तानुबधी आदि क्रोधके चार तथा अनन्तानुबधि आदि मानके चार फिर अन तानुबधि आदि मायाके चार और अनन्तानुबधी आदि लोभके चार यह सोळ कषाय अब ननो कशाय कहते हे हास्य १ रति २

२५ (**उज्जोय**) उद्योतनामकर्म २६ (**सुभखगइ**) शुभ विहायोगति जिस कर्मके उदयसें जीवकी हससमान चाली हो २७ (**निमिण**) निर्माण नामकर्म २८ (**तसदस**) त्रस दशक ३८ इस दशकेका भेद आगेकी गाथासें कहेंगे (**सुर**) देवआयु नामकर्म ३९ (**नर**) मनुष्यआयु नाम कर्म ४० (**तिरियाउ**) तिर्यंचआयु नामकर्म ४१ (**तित्थयरं**) और तीर्थंकरनामकर्म ४२

॥ अथ त्रसका दसका कहते है ॥

॥ तसबायरपज्जत्त पत्तेयथिरसुभचसुभगच
सुस्सरआइज्जजस तसाइदसगइमहोइ ॥ १७ ॥

॥ (**तस**) त्रसनामकर्म १ (**बायर**) बादरनामकर्म २ (**पज्जत्त**) पर्याप्तनामकर्म एक लब्धि पर्याप्ता दुजाकरणपर्याप्ता ऐसे दो भेद ३ (**पत्तेय**) प्रत्येकनामकर्म ४ (**थिर**) स्थिरनामकर्म ५ (**सुभं**) शुभनामकर्म ६ (**च**) और (**सुभग**) सौभाग्यनामकर्म ७ (**च**) और (**सुस्सर**) सुस्वरनामकर्म जिसका स्वर कोकिलाकी तरह मधुर हो ८ (**आइज्जा**) आदेयनामकर्म ९ (**जस**) यशकीर्तिनामकर्म १० (**तसाइ**) त्रस आदिक (**दसग**) दशक (**इमहोइ**) इस प्रकारसें है ॥ १७ ॥ इतिपुण्यतत्त्वम् ॥

॥ अब पुण्य तत्वके बयालिस भेद कहते है ॥

॥ साउच्चगोअमणुदुग सुरदुगपंचिंदिजाइपणदेहा
आइतितणुवंगा आइमसघयणसठाणा ॥ १५ ॥

॥ (सा) शाता वदनी कर्म १ (उच्चगोअ) उच गोत्र कर्म २ (मणुदुग) मनुष्य गति ३ और मनुष्यानुपूर्वी ४ (सुरदुग) देवगति ५ और देवानुपूर्वी ६ (पंचिदिजाइ) पचेन्द्रि जातीनाम कर्म ७ (पणदेहा) औदारीकादि शरीर पाँच १२ (आइतितणु) आदिके तीन शरीरका (णुवगा) अगोपाग १५ (आइमसघयणसठाणा) आदि वज्ररुषभनाराच सघयण १६ और प्रथम सस्थान समचोरस १७ ॥ १५ ॥

॥ वण्णचउक्कागुरुलहु परघाऊसासआयवुज्जोय
सुभखगइनिमिणतसदस सुरनरतिरियाउतित्थयर ॥१६॥

॥ (वण्णचउक्का) शुभवर्णादिचार २१ (अगुरुलहु) अगुरुलघु २२ (परघा) पराघातनाम कर्म २३ (ऊसास) शुभ स्वासोस्वास नामकर्म २४ (आयव) आतापना नामकर्म

॥ परिणामिजीवमुत्त सपएसाएगखित्तकिरिआय णिच्चकारणकत्ता सव्वगयइयरअप्पवेसे ॥ १४ ॥

॥ (**परिणामि**) छ द्रव्यम परीणामी कितना और अपरीणामी कितना निश्चयनयसे तो छेही द्रव्य अपरीणामी है और व्यवहारनयसे तो एक जीव दुसरा पुद्गल यह दो परीणामी बाकीके चार अपरीणामी हे १ (**जीव**) य छ द्रव्यमें एक जीवद्रव्य चेतन हे शेष पाँच द्रव्य अजीव अचेतन्य हे २ (**मुत्त**) यह छ द्रव्यम एक पुद्गल जो है वह मुर्त्तिमत हे बाकीके पाँच द्रव्य अमुत्त अरूपी है (**सपएसा**) यह छे द्रव्यम पाँच प्रदेशी है और एक कालद्रव्य अप्रदेशी हे (**एग**) यह छे द्रव्यमें धर्म अधर्म और आकाश य तीन द्रव्य एक हे शेष तीन अनेक है (**खित्त**) यह छ द्रव्यमें एक आकाश द्रव्य जो हे वह क्षेत्र हे शेष पाँच क्षेत्री हे (**किरिआय**) इस छे द्रव्यम जीव और पुद्गल यह दो द्रव्य सक्रिय हे शेष चार द्रव्य अक्रिय हे (**णिच्च**) ये छे द्रव्यमें व्यवहारसे तो धर्म अधर्म आकाश और काल यह चार नित्य है बाकीके दो द्रव्य अनित्य है और निश्चयसे छेही द्रव्य नित्य हे (**कारण**) जीवको छोडकर पाँच द्रव्य कारण हे और जीवद्रव्य अकारण हे (**कत्ता**) ये छे द्रव्यम जीव तथा पुद्गल व्यवहारसे कर्त्ता बाकीके चार अकर्त्ता (**सव्वगय**) ये छ द्रव्यमें एक आकाशद्रव्य लोकालोक व्यापक है और बाकीके पाँच द्रव्य लोक व्यापी है (**इयर**) इतर (**अप्पवेसे**) कोई द्रव्य कोईसें मिले नही ॥ १४ ॥ इति अजीवतत्त्वम् ॥

॥ समयावलीमुहुत्तं दीहापख्खायमासवरिसाय
भणिओपलिआसागर उस्सप्पिणीसप्पिणीकालो ॥ १२ ॥

॥ (**समय**) समय, अतिसुक्ष्म कालको समय कहते है ऐसे असख्य समयकी (**आवली**) एक आवलिका होती है (**मुहुत्त**) मुहूरतकालका प्रमाण आवलीकी सख्यामें पूर्वकी बारवी गाथासें जाणलेना (**दीहा**) ऐसें तीस मुहूर्तका एक अहोरात्री दिन (**परखा**) ऐसे पद्रह दिनका एक पक्ष (**य**) और (**मास**) ऐसे दो पक्षका एक मास (**वरिसा**) ऐसे बारह मासका एक वर्ष (**य**) और (**भणिओ**) कहा हे (**पलिआ**) ऐसे असख्य वर्षका एक पल्योपम, ऐसे दश कोडाकोडी पल्योपमका (**सागर**) एक सागरोपम, ऐसे दश कोडाकोडी सागरोपममिलनेसें एक (**उस्सप्पिणी**) उत्सर्पिणी और ऐसे दश कोडाकोडी सागरोमकी एक (**सप्पिणी**) अवसर्पिणी होती है (**कालो**) ऐसे उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी मिलकर एक काल चक्र और ऐसे अनते काल चक्र जानेपर एक पुद्गल परावरतन होते है । ऐसा अनता पुद्गल परावरतन होचुके और आगे होवेंगे इति कालद्रव्यका मान कहा ॥ १२ ॥

॥ अब द्रव्यका स्वरूप इग्यारे बोलसे देखलाते है ॥

॥ सद्दधयारउज्जोय पभाछायातवेहिआ
वण्णगधरसाफासा पुग्गलाणतुलक्खण ॥ ११ ॥

॥ (सद्द) जीव शब्दादि जिन (अधयार) अधकार (उज्जोय) प्रकाश (पभा) ज्योति (छाया) छाया (तवेहिआ) सूर्य आदिकी आतापना (वण्ण) पांचोही वर्ण (गध) दोनु गध (रसा) पांचरस (फासा) आठ स्पर्श (पुग्गलाणतु) पुद्गलका एसे (लक्खण) लक्षण हे ॥ ११ ॥

॥ अब कालद्रव्यका स्वरूप कहते है ॥

॥ एगाकोडिसतसट्ठि लक्खासत्तहुत्तरीसहस्साय
दोयसयासोलहिया आवलियाइगमुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥

॥ (एगाकोडि) एक क्रोड (सतसट्ठिलक्खा) सडसठ लाख (सत्तहुत्तरीसहस्साय) सितोतर हजार (दोयसयासोलहिया) दोसोसे कुछ सोलह अधिक (आवलिया) १६७७७२१६ आवलिका (इग) एक (मुहुत्तम्मि) मुहूर्तके विषे होती हे ॥ १२ ॥

॥ अब अजीव तत्त्वका विशेष स्वरूप देखलाते है ॥

॥ धम्माऽधम्मापुग्गल नहकालोपचहुतिअजीवा
चलणसहावोधम्मो थिरसठाणोअहम्मोय ॥ ९ ॥

॥ (धम्माऽधम्मा) धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय (पुग्गल) पुद्गलास्तिकाय (नह) आकाशास्तिकाय (कालो) और काल (पच) यह पाच (हुति) है (अजीवा) अजीव द्रव्य (चलणसहावो) चलन स्वभाव गुणवाला (धम्मो) धर्मास्तिकाय है (थिर-संठाणो) और स्थिरस्वभावगुण वाला (अहम्मोय) एक अधर्मास्तिकायमें है ॥ ९ ॥

॥ अवगाहोआगास पुग्गलजीवाणपुग्गलाचउहा
खंधादेसपएसा परमाणुचेवनायवा ॥ १० ॥

॥ (अवगाहो) अवकाश स्वभावगुणवाला (आगास) आकाशास्तिकायमें है, वह (पुग्गल) पुद्गलको (जीवाण) और जीवको अवकाश देता है (पुग्गला) पुद्गलके (चउहा) चार भेद है (खधा) खध (देस) देश (पएसा) प्रदेश (परमाणु) और परमाणु ऐसे (चेव) निश्चे (नायव्वा) जानना ॥ १० ॥

३ (पज्जत्ती) ऐसे तिन पर्याप्ति (आणपाण) स्वासोस्वास ४ (भास) भाषा ५ (मणे) मनपर्याप्ति ६ (चउ) आहारादि चार (पच) मन छोडकर पाँच (छप्पिय) मन सहित सपूर्ण छे पर्याप्ति (एग) एक इद्रीको चार (विगला) विगलेंद्रीको मन छोडकर पाँच (असन्नि) असनी पचेन्द्रिको मन छोडके पाच (सन्नीण) संनी पचेंद्रिको छे है ॥ ६ ॥ अब जो इस अपनी अपनी पर्याप्ति पूरी करके मरे सो जीव पर्याप्ता और नीना पूरी कीए मरे सो जीव अपर्याप्ता कहलाता है ॥

॥ अब जीवोका प्राण कहते है ॥

॥ पणिंदियत्तिवलूसा–साऊदसपाणचउछसगअह्व इगदुतिचउरिंदीण असन्निसन्नीणनवदसय ॥ ७ ॥

॥ (पणिदिय) पाँच इद्रीयो (त्तिबल) मनादि तीन बल (ऊसास) स्वासोस्वास (आऊ) आयु (दस) ऐसे दस (पाण) प्राण है (चउ) स्पर्शेनेद्रिय कायबल स्वासोस्वास और आयु ऐसे चार (छ) पूर्वका चारकी साथ रसना और वचन ऐसे छे (सग) पूर्वका छेकी साथ नासीका ऐसे सात, (अह्व) आठ प्राण, पूर्वका सातकी साथ चक्षु (इग) एकेंद्रिको पूर्वका चार (दु) दो इद्रीको पूर्वका छे (ति) ते इद्रिको पूर्वका सात (चउरिंदीण)

॥ अब जीवका लक्षण कहते है ॥

॥ नाणचदंसणचेव चरित्तचतवोतहा
वीरियउवओगोय एयजीवस्सलरखण ॥ ५ ॥

॥ (नाण) ज्ञान आठ प्रकारे पाँच सम्यक्त्व आसरे और तीन अज्ञान मिथ्यात्व आसरे (च) और (दंसण) दर्शनका चार भेद (चेव) निश्चे (चरित्त) चारीत्रका पाँच भेद सामायक आदि निश्चय व्यवहार (च) फिर (तवो) तपके बारह भेद (तहा) तैसेही (वीरिय) वीर्य दो प्रकारके (उवओगो) उपयोगके बारह भेद (य) और (एय) ये (जीवस्स) जीवका (लरखण) लक्षण है ॥ ५ ॥

॥ अब जीवोंकी पर्याप्ती कहत है ॥

॥ आहारसरीरइंदिय पज्जत्तीआणपाणभासमणे
चउपचपचछप्पिय इगविगलासन्निसन्नीण ॥ ६ ॥

॥ (आहार) आहारपर्याप्ति १ (सरीर) शरीरपर्याप्ति २ (इंदिय) इन्द्रियपर्याप्ति

देव मनुष्य तिर्यंच और नारक इसप्रकारसें जीव चार तरहका (पच) एकेन्द्रि आदिसे जीव पाँच तरहका (छव्विहा) पृथ्वी आदि लेकर छे तरहका (जीवा) जीव है (चेयण) ज्ञानादि चेतना सहित (तस) त्रस हलने चलते सो (इयरेहिं) इतर स्थिर रहे सो स्थावर (वेय) तीन वेद (गई) चार गति (करण) इंद्री पाँच (काएहिं) काया छ ॥ ३ ॥

॥ अब प्रथम जीवका चौदह भेद कहते है ॥

॥ एगिंदियसुहुमियरा सन्नियरपणिंदियायसबितिचउ अपजत्तापज्जत्ता कमेणचउदसाजियठाणा ॥ ४ ॥

॥ (एगिंदिय) एकेन्द्रि जीवोके दो भेद हे (सुहुमियरा) एक सूक्ष्म और दुसरा बादर (सन्नि) मन सहित (इयर) दुसरा असनि मन रहित एसे (पणिंदियाय) पचेन्द्रिके दो भेद है (स) उस पूर्वका चारकी साथ (बि) दो इन्द्रीका एक भेद (ति) तेइन्द्रीका एक भेद (चउ) चौरीन्द्रीका एक भेद यह तिन मिळानेसे सात हुवा (अपजत्तापज्जत्ता) वह सात अपर्याप्ता और दुसरा सात पर्याप्ता (कमेणचउदस) अनुक्रमसे ऐसे सब मिलकर चौदह (जिय) जीवोंका (ठाणा) स्थान हे ॥ ४ ॥

॥ चउदसचउदसबायालीसा बासीयहुतिबायाला
सत्तावन्नबारस चउनवभेयाकमेणेसिं ॥ २ ॥

॥ (चउदस) जीवका चौदह भेद (चउदस) अजीवका भी चौदह भेद (बायालीसा) पुण्यके बयालीस भेद (बासीय) पापका ब्यासी भेद (हुति) है (बायाला) आश्रवके बयालीस भेद है (सत्तावन्न) संवरका सत्तावन भेद (बारस) निर्जराके बारह भेद (चउ) बंधके चार भेद (नव) और मोक्षतत्वका नव (भेया) भेद है (कमेणेसिं) अनुक्रमसे नव तत्वका सब मिलकर २७६ भेद है ॥ २ ॥

॥ अब जीवकी छ जाति कहते है ॥

॥ एगविहदुविहतिविहा चउविहापचछविहाजीवा
चेयणतसइयरेहिवेयगई करणकाएहि ॥ ३ ॥

॥ (एगविह) चेतना लक्षणसें सब जीवो एक प्रकारे हे (दुविह) त्रस और स्थावरपणसे जीवोंके दो भेदहै (तिविहा) स्त्रीवेद पुरुषवेद और नपुंसकवेदमें जीवोंके तिन भेद है (चउव्विहा)

॥ अथ नवतत्त्वप्रकरण प्रारंभ· ॥

॥ जीवाऽजीवापुण्णं पावाऽसवसवरोयनिज्जरणा
बधोमुक्खोयतहा नवतत्ताहुतिनायवा ॥ १ ॥

॥ (जीवा) जीव, द्रव्य और भावप्राणको धारण करनवाले (अजीवा) ज्ञान–चेतनासे रहित सो अजीव (पुण्ण) शुभ फलका जो भोगना वह पुण्य (पावा) अशुभ फलको जो भोगना वह पाप (आसव) जो शुभाशुभ कर्मका आना वह आश्रव कहलाते हे (सवरो) जो शुभाशुभ कर्मको रोकना वह सवर कहलाते है। (य) और (निज्जरणा) जो आत्मध्यानमें शुभाशुभ दोनु कर्मको बालके भस्मीभूत करके सर्वथा नही लेकीन देससें उडादेना वह निर्मरातत्त्व (बंधो) जो शुभाशुभ कर्मका खीरनिरकी तरह आत्मप्रदेशकी साथ बधहोना वह बधतत्त्व (मुक्खो) सर्वथा कर्मोसें जो मुक्त होना सो मोक्षतत्त्व (य) फिर (तहा) तेसे (नव) नव (तत्ता) तत्त्व याने रहस्य (हुति) है (नायव्या) जानने योग्य ॥ १ ॥

॥ एसोजीववियारोसखेवरुईण जाणणाहेउ
संखित्तोउद्धरिओ रुद्दाओसुयसमुद्दाओ ॥ ५१ ॥

॥ (एसो) इसप्रकारसे (जीव) जीवोंका (वियारो) विचार (सखेवरुईण) संक्षेप रुचीवाले जीवोंको (जाणणाहेऊ) जाननेके लिये (संखित्तो) संक्षेप मात्र (उद्धरिओ) उद्धार किया है (रुद्दाओसुयसमुद्दाओ) बहोत विस्तार वाले सूत्ररूप समुद्रसे ॥ ५१ ॥

इति श्रीमन्महायोगीन्द्र आनन्दघन महाराजचरणोपासक अध्यात्मजितमुनि-
विरचित हिन्द्यनुवादसहित जीवविचारप्रकरण समाप्तम्

॥ कालेअणाइनिहणे जोणिगहणम्मिभीसणेइत्थ
भमियाभमिहतिचिर जीवा जिणवयणमलहता ॥ ४९ ॥

॥ (कालेअणाइनिहणे) अनादि अनन्तकालमें (जोणिगहणम्मि) योनियोंस गहन और (भीसणेहत्थ) भयकर इस ससारम (भमिया) भ्रमण करचुके (भमिहंति) फिर भ्रमण करेगा (चिर) बहोत काल तक (जीवा) जीवों (जिणवयणमलहता) जिनेश्वर महाराजका उपदेशरूपी वचनको नही प्राप्त हुवा ऐसा ॥ ४९ ॥

॥ तासपइसपत्ते मणुअत्तेदुल्लहेविसमत्ते
सिरिसतिसूरिसिट्ठे करेहभोउज्जमधम्मे ॥ ५० ॥

॥ (ता) इस वास्त (संपइसपत्ते) इस समयपर प्राप्त हुवा (मणुअत्ते) मनुष्य भव (दुल्लहे) महा दुर्लभ हे (वि) इसमे भी दुर्लभ (समत्ते) सम्यक्त्व प्राप्त हुवा हे (सिरि) ज्ञान रूपी लक्ष्मीका धरणेवाले (सतिसूरि) इस जीवविचारका बनानेवाला शातिसूरि महाराज कहते हे (सिट्ठे) श्रेष्ठ पुरुषोने कहा हुआ (करेहभो) हे भव्य प्राणियो करलो (उज्जम) उद्यम (धम्मे) धर्मके विषे ॥ ५० ॥

॥ (चउरोचउरो) चार चार लाख योनि (नारयसुराण) नारीकी और देवाकी हे (मणुआण) मनुष्यकी (चउदसह्वति) चौदह लाख योनि है (सपिंडिआयसव्वे) ऐसे सब इकठ्ठी मिलानसे (चुलसीलख्खाउजोणीण) सब जीवोंकी योनिकी सख्या चोरासी लाख है ॥ ४७ ॥ इति ससारी जीवोंका वर्णन ममाप्त

॥ अब सिद्ध जीवोक आश्रयी द्वार कहत हे ॥

॥ सिद्धाणनत्थीदेहो नआउकम्मनपाणजोणीओ
साइअणतातेसि ठिईजिणदागमेभणिया ॥ ४८ ॥

॥ (सिद्धाणनत्थीदेहो) सिद्ध जीवोको शरीर नही हे (नआउकम्म) आयु भी नही और कर्म भी नही हे (नपाणजोणीओ) प्राण भी नही और योनि भी नही हे (साइअणतातेसिं) उसकी सादि अनन्त (ठिई) स्थिति (जिणदागमेभणिया) जिनेश्वर महाराज क सिद्धातोंमें कही हे ॥ ४८ ॥

॥ असीरका उपदेश ॥

॥ (तह) तेसेही (चउरासीलख्खा) चोरासी लाख (सखाजोणीणहोइ) सख्या योनिकी हे (जीवाण) जीवोकी (पुढवाईण) पृथ्वीकाय आदि (चउण्ह) चारकी (पत्तेय) प्रत्येक प्रत्येककी (सत्तसत्तेव) सात सात लाख है ॥ ४५ ॥

॥ अब वनस्पतिकाय, विकलेंद्री जीवो और पचेन्द्री तिर्यचकी योनि कहते हे ॥

॥ दसपत्तेयतरूण चउदसलख्खाहवतिइयरेसु
विगलिदिएसुदोदो चउरोपचिदितिरियाण ॥ ४६ ॥

॥ (दस) दश लाख योनि (पत्तेयतरूण) प्रत्येक वनस्पतिकी हे (चउदसलख्खा-हवति) चौदह लाख हे (इयरेसु) इतर साधारणकी (विगलिदिएसुदोदो) विगलेन्द्रिकी दोदो लाख कही है (चउरोपचिदितिरियाण) और चार लाख तिर्यच पचेन्द्रियकी हे ॥ ४६ ॥

॥ अब तिर्यचके बिना सब पचेन्दी जीवोकी योनि कहते हे ॥

॥ चउरोचउरोनारय सुराणमणुआणचउदसहवति
सपिडिआयसवे चुलखीलख्खाउजोणीण ॥ ४७ ॥

॥ अब जीवोंके प्राणवियोग रूप मरण कितनी वेर हुए है सो कहते है ॥

॥ एवंअणोरपारेसंसारे सायरम्मिभीमम्मि
पत्तोअणंतखुत्तो जीवेहिअपत्तधम्मेहि ॥ ४४ ॥

॥ (एवं) इस प्रकारसे (अणोरपारे) जिसका पार नही है ऐसा (संसार) संसाररूपी (सायरम्मि भीमम्मि) भयंकर समुद्रमें (पत्तो) मरण प्राप्त हुआ है (अणंत-खुत्तो) अनंतिवेर (जीवेहि) जीवों (अपत्तधम्मेहि) जिनेश्वर महाराजाके धर्मको नही प्राप्त हुआ ऐसा ॥ ४४ ॥

योनिद्वार

॥ इसमें प्रथम पृथ्वीकाय आदि चार स्थावरकी योनि कहते है ॥

॥ तहचउरासीलक्खा संखाजोणीणहोइजीवाणं
पुढवाईणचउण्ह पत्तेयसत्तसत्तेव ॥ ४५ ॥

प्राणद्वार

॥ अब दो गाथासे सब जीवोंका प्राण कहते हे ॥

॥ दसहाजिआणपाणा इंदिऊसासाउजोगवलरूवा
एगिंदिएसुचउरो विगलेसुछसत्तअट्ठेव ॥ ४२ ॥
॥ असन्निसन्नीपचिंदिएसु नवदसकमेणबोधव्वा
तेहिंसहविप्पओगो जीवाणभण्णएमरण ॥ ४३ ॥

॥ (**दसहा**) दश प्रकारके (**जिआण**) जीवोंक (**पाणा**) प्राण है (**इंदि**) पांचोइंद्री (**ऊसास**) स्वासोच्छ्वास (**आउ**) आयु (**जोगवल**) मनादि तीन योग बल (**रूवा**) रूप (**एगिंदिएसु**) एकेंद्रिको (**चउरो**) चार प्राण १ फरशइंद्री २ कायबल ३ स्वासोच्छास और आयु एसे चार (**विगलेसु**) विकलेन्द्रिको (**छसत्त**) छ, सात (**अठेव**) और आठ अनुक्रमसें जान लेना ॥ ४२ ॥

॥ (**असन्नि**) असनी पचेंद्रीयको (**सन्नीपचिंदिएसु**) सनीपचेंद्रि जीवोंका प्राण (**नव**) नव (**दस**) दश (**कमेण**) अनुक्रमसें (**बोधव्वा**) जान लेना (**तेहिसह**) उसकी साथसें (**विप्पओगा**) जो वियोग होना (**जीवाण**) जीवोंका (**भण्णए**) कहते है (**मरण**) सो मरण ॥ ४३ ॥ इति प्राणद्वार

॥ (एगिंदियाय) ऐकेन्द्रि (अनतकायको छोडकर) (सव्वे) और सर्व (असख) असख्याती (उस्सप्पिणी) उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी कालतक (सकायमि) अपनी कायामें (उववज्झति) उत्पन्न होते है (चयति) चवन है (य) और (अणतकाया) अनतकायके जीवों स्वकायामें (अणताओ) अनती वेर ॥ ४० ॥

॥ अब विकलेंद्रि और पचेंद्रि जीवोकी स्वकाय स्थिति कहते हे ॥

॥ सखिज्झसमाविगला सत्तठभवापणिदितिरिमणुआ उववज्झतिसकाए नारयदेवायनोचेव ॥ ४१ ॥

॥ (सखिज्झसमा) सख्याता वर्ष तक (विगला) विकलेंद्रीकी स्वकाय स्थिति है (सत्तठभवा) सात आठ भवतक (पणिदितिरि) पचेंद्री तिर्यंच (मणुआ) और मनुष्य (उववज्झति) उपजते हे (सकाए) अपनी कायामें (नारयदेवाय) नारकी और देवता अपनी कायमें (नो) न उपजे न चव तसहि नारक चवके देवता न होवे और देवता चवकर नारक न होवे (चेव) निश्चय करके इस प्रकारे जीवोकी स्वकाय स्थिति कही ॥ ४१ ॥

(जहन्नेणं) और जघन्यसें (अंतमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तमात्र (चिय) निश्चय करके (जियति) जीता है ॥ ३८ ॥

॥ ओगाहणाउमाण एवसखेवओसमक्खाय
जेपुणइत्थविसेसा विसेससुत्ताउतेनेया ॥ ३९ ॥

॥ (ओगाहणा) शरीरकी अवगाहनाका (आउमाण) और आयुका प्रमाण (एव) इस प्रकार (सखेवओ) सक्षेपसे (समक्खाय) अच्छी तरहसें कहा (जे) जो (पुण) फिर (इत्थ) इसमे (विसेसा) विशेष है (विसेससुत्ताउ) विशेष सूत्रोंसे (ते) उनको (नेया) जानना ॥ ३९ ॥

स्वकायस्थितिद्वार

॥ इसमे प्रथम एकेंद्रिकी स्वकाय स्थिति कहते है ॥

॥ एगिंदियायसवे असखउस्सप्पिणीसकाय
उववज्झतिचयतिय अणतकायाअणताओ ॥ ४० ॥

॥ अब गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिका आयुष्य कहते है ॥

॥ जलयरउरभुअगाण परमाऊहोइपुवकोडीओ
पक्खीणपुणभणिओ असखभागोयपलियस्स ॥ ३७ ॥

॥ (जलयर) जलचर जीवोंका (उर) उरपरी सर्पका (भुअगाण) और भुजपरि सर्पका (परमाऊ) उत्कृष्ट आयु (होइ) होते है (पुव्वकोडीओ) एक पूर्वकोडीवर्षरा (पक्खीण) पक्षियोंका आयुष्य (पुण) फिर (भणिओ) कहा हे (असख भागोय- पलियस्स) पल्योपमके असख्यातमें भागे ॥ ३७ ॥ इस प्रकार जीवोकी उत्कृष्टी आयु स्थिति कही

॥ अब सुक्ष्म स्थावर और समुर्छिम मनुष्यकी आयु स्थीति कहते हे ॥

॥ सवेसुहुमासाहारणाय समुच्छिमामणुस्साय
उक्कोसजहन्नेण अतमुहुत्तचियजियत्ति ॥ ३८ ॥

॥ (सव्वे) सब (सुहुमा) सुक्ष्म (साहारणा) और साधारण वनस्पतिकाय (य) फिर (समुच्छिमा) समूर्च्छिम (मणुस्साय) मनुष्य (उक्कोस) उत्कृष्ट

॥ अब विकलेंद्री जीवोके आयुका प्रणाम कहते है ॥

॥ वासाणिवारसाऊ विइदियाणतिइदियाणतु
अऊणापन्नदिणाइ चउरिंदीणतुछम्मास ॥ ३५ ॥

(वासाणिवारसाऊ) बारह वर्षका आयु (विइदियाण) दो इन्द्री जीवोका कहा हे (तिइदियाण) तेइन्द्री जीवोंका (तु) फिर (अऊणापन्नदिणाइ) गुणपचास दिनका है (चउरिंदीणं) चौरिन्द्री जीवोका आयु (तु) फिर (छम्मास) छ मासका आयु उत्कृष्टा कहा है ॥ ३५ ॥

॥ अब पचेंद्रि जीवोका आयुप्रमाण कहते है ॥

॥ सुरनेरइयाणठिई उक्कोसासागराणितित्तीस
चउपयतिरियमणुस्सा तिन्नियपलिओवमाहुति ॥ ३६ ॥

(सुर) देवता (नेरइयाण) और नारककी (ठिई) आयु स्थिति (उक्कोसा) उत्कृष्टी (सागराणितित्तीस) तेतीस सागरोपमकी है (चउपय) चार पैरवाले (तिरिय) तिर्यंचका (मणुस्सा) और मनुष्यका उत्कृष्टा आयु (तिन्निय) तीन (पलिओवमा) पल्योपमका (हुंति) है ॥ ३६ ॥

आठमा देवलोकका एक दुग इसमें देवोंका शरीर चार हाथका है (**चउ**) एक चतुष्क इसलिये नवमा दशमा ग्यारमा और बारहमा यह चार देवलोकके देवोंका शरीर तीन हाथका है (**गेविज्ज**) नव ग्रैवयक देवोंका शरीर दो हाथका है (**अणुत्तर**) पाच अनुत्तर विमानके देवोंका शरीर एक हाथका है (**इक्किक्कपरिहाणी**) एक एक हाथकी हाणी करणा ॥ ३३ ॥

आयुष्यद्वार

॥ इसम प्रथम एकेंद्रिय जीवोंके आयुका प्रमाण कहते है ॥

॥ बावीसापुढवीए सत्तयआउस्सतिन्निवाउस्स
वाससहस्सादसतरु गणाणतेऊतिरित्ताउ ॥ ३४ ॥

(**बावीसा**) बावीश हजार वर्षका (**पुढवीए**) पृथ्वीकायके जीवोका आयु है (**सत्तय**) सात हजार वर्षका (**आउस्स**) अपकायके जीवोंका आयु है (**तिन्नि**) तीन हजार वर्षका (**वाउस्स**) वाउकायके जीवोंका आयु है (**वाससहस्सादस**) दश हजार वर्षका (**तरु**) प्रत्येक वनस्पतिका आयु है (**गणाणतेऊ**) अग्निकाय जीवोके सुहरा (**ति**) तिन (**रित्ताउ**) अहोरात्रीका आयु कहा है ॥ इसप्रकारे बादर एकेन्द्रीका आयुष्य उत्कृष्टा कहा और जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त्तका समज लेना ॥ ३४ ॥

॥ छच्चेवगाउआइं चउप्पयागब्भयामुणेयव्वा

कोसतिगचमणुस्सा उक्कोससरीरमाणेण ॥ ३२ ॥

(**छ**) छ (**च्चेव**) निश्चे (**गाउआइं**) कोशका (**चउप्पया**) चार पेरवाला (**गब्भया**) गर्भजका (**मुणेयव्वा**)-जानना (**कोसतिग**) तीनकोशका (**च**) फिर (**मणुस्सा**) मनुष्योंका (**उक्कोस**) उत्कृष्ट (**सरीर**) शरीरका (**माणेणं**) प्रमाण जानना ॥ ३२ ॥

॥ अब देवोंका स्वाभाविक शरीरमान कहते है ॥

॥ इसाणतसुराण रयणीओसत्तहुतिउच्चत्त

दुगदुगदुगचउगेविज्जणुत्तरेइक्किक्कपरिहाणी ॥ ३३ ॥

(**इसाणत**) भुवनपतिसे लेकर दुसरा इशान देवलोक तक (**सुराण**) देवताओंके शरीरका प्रमाण (**रयणीओ**) हाथ (**सत्त**) सातका (**हुति**) है (**उच्चत**) उचपणे (**दुग**) तीसरा और चोथा देवलोकका एक दुग इसमे देवोका शरीर ६ हाथका है (**दुग**) पचमा और छठा देवलोकका एक दुग इसमें देवोका शरीर पाच हाथका है (**दुग**) सातमा और

(धणुह) धनुष्य (पुहुत्त) दोसे लेकर नव तकका (पक्खीसु) पक्षीयोंका शरीर है (भुअचारी) भुजपरी सर्पका (गाउअ) कोश (पुहुत्त) दोसे लेकर नवतक गर्भजका जानना ॥ २० ॥

॥ अब सुम्मुर्छिम पचेंद्री तिर्यंचका देहमान कहते हे ॥

॥ खयराधणुअपुहुत्त भुअगाउरगायजोयणपुहुत्त
गाउअपुहुत्तमित्ता समुच्छिमाचउपयाभणिया ॥ २१ ॥

(खयरा) खेचर पक्षीयोंका शरीर (धणुअपुहुत्त) दो धनुष्यसे लेकर नव धनुष्य तकका है (भुअगा) और भुजपरी सर्पकाभी इतना है (उरगाय) उरपरी सर्पका (जोयण) जोजन (पुहुत्त) दोसे लेकर नवतकका है (गाउअ) कोश (पुहुत्तमित्ता) दोसे नवतकका प्रमाण (समुच्छिमा) सम्मुर्छिम (चउपया) चारपैर वाले जीवोंका (भणिया) कहा है (अढाइ द्वीपके बहार) ॥ २१ ॥

॥ अब गर्भज चतुष्पद तिर्यंच तथा मनुष्यका शरीरमान कहते हे ॥

॥ अब नारक जीवोंके शरीरका प्रमाण कहते है ॥

॥ धणुसयपचपमाणा नेरइयासत्तमाइपुढवीए
तत्तोअध्धध्धूणा नेयारयणप्पहाजाव ॥ २९ ॥

(**धणु**) धनुष्य (चार हाथको एक) (**सयपचपमाण**) पांचसोका प्रमाण (**नेरइया**) नारक जीवोका (**सत्तमाइ**) सातमी (**पुढवीए**) पृथ्वीके (**तत्तो**) उससे (**अद्धधुणा**) आधा आधा कम प्रमाण (**नेया**) जानना (**रयणप्पहाजाव**) यावत् पहिली रत्नप्रभातक ॥ २९ ॥

॥ अब जो तीन प्रकारके गर्भज पंचेन्द्रीतिर्यंच होत हे उसके शरीरका प्रमाण कहते है ॥

॥ जोयणसहस्समाणा मच्छाउरगायगभ्भयाहुति
धणुअपुहुत्तपक्खीसु भुअचारीगाउअपुहुत्त ॥ ३० ॥

(**जोयण**) जोजन (**सहस्स**) हजार (**माणा**) प्रमाणका शरीर, (**मच्छा**) मच्छका (**उरगा**) और उरपरी सर्पका (**य**) फिर (**गभ्भया**) गर्भजका (**हुति**) है

॥ अगुलअसखभागो सरीरमेगिदियाणसवेसि
जोयणसहस्समहिय नवरपत्तेयरुख्खाण ॥ २७ ॥

(**अगुल**) अगुलका (असंख्य) असंख्यातमे (**भागो**) भागे (**सरीरमेगिंदियाणसव्वेसि**) सब एकेंद्री जीवाका शरीर (प्रतक वनस्पतिको छोडकर है (**जोयणसहस्समहिय**) हजार जोजनमे कुछ अधिक (**नवर**) इतना विशष (**पत्तेयरुख्खाण**) प्रत्येक वनस्पतिका शरीर जानना ॥ २७ ॥

॥ अथ विकलेंद्री जीवांके शरीरका प्रमाण कहते है ॥

॥ बारसजोयणतिन्नेव गाऊआजोयणचअणुकमसो
वेइदियतेइदियचउरिदियदेहमुच्चत ॥ २८ ॥

(**बारसजोयण**) बारह जोजनका (**तिन्नेवगाऊआ**) तिन कोशका (**जोयणच**) एक जोजनका (**अणुकमसो**) अनुक्रमसे (**वेइदिय**) दोइंद्री जीवोंका (**तेइदिय**) तेइंद्रीका (**चउरिदिय**) और चोरिंद्री जीवोका (**देहमुच्चत्त**) शरीरका उचपणा जानना ॥ २८ ॥

(सिद्धा) सिद्धोंके **(पनरस)** पन्द्रह **(भेया)** भेद है **(तित्थ)** तीर्थंकर सिद्ध **(अतित्थाइ)** अतीर्थंकर आदि **(सिद्धभेएण)** सिद्धोंके भेदोंसें **(एए)** इस प्रकारें **(सखेवेण)** सक्षेपसें **(जीव)** जीवोंका **(विगप्पा)** भेद **(समक्खाया)** अछी तरहसें कह गये ॥ २५ ॥

॥ अब आगे कहना है सो द्वार इस गाथा करके कहत है ॥

॥ एएसिजीवाण सरीरमाऊठिईसकायमि
पाणाजोगिपमाण जेसिजअत्थितभणिमो ॥ २६ ॥

(एएसि) इन पूर्वोक्त **(जीवाण)** जीवोंके **(सरीर)** शरीर कितना **(आऊ)** आयुप्रमाण कितना **(ठिईसकायमि)** स्वकायाम रहनकी स्थिति कितनी **(पाणा)** प्राण कितना **(जोणिपमाणं)** योनिका कितना प्रमाण **(जेसि)** जिसके **(ज)** जितना **(अत्थि)** है **(त)** इतना **(भणिमो)** कहुगा ॥ २६ ॥

शरीरद्वार

॥ इसमें प्रथम एकेंद्रियका शरीर प्रमाण कहत है ॥

(सव्वे) सन (जल) जल्चर (थल) स्थल्चर (खयरा) और खेचर (समुच्छिमा) सम्मुर्च्छिम (गब्भया) गर्भज (दुहा) दो प्रकारके प्रत्येकप्रत्येक (हुति) है ॥ अब उत्तरार्धगाथासे मनुष्यके भेद कहते है (कम्मा) करमाभूमीके (अकम्मगभूमी) अकरमाभूमिके (अतरदीवा) अतरद्वीपके (मणुस्साय) मनुष्य है ॥ २३ ॥

॥ अब देवोंके भेद कहत है ॥

॥ दसहाभवणाहिवई अठविहावाणवतराहुति

जोइसियापचविहा दुविहावेमाणियादेवा ॥ २४ ॥

(दसहा) दश प्रकारके (भवणाहिवई) भुवनपतीहै (अठविहा) आठ प्रकारके (वाणवतरा) व्यत्रीक और वाणव्यत्रीक (हुति) है (जोइसिया) ज्योतिषी (पचविहा) पाच प्रकारके (दुविहा) दो प्रकारके (वेमाणिया) वैमानीक (देवा) देवता है ॥ इस प्रकारे ससारी जीवोंका सक्षेपसे भेद कहा है ॥ २४ ॥

॥ अब सिद्धोके जीवोंका भेद कहते है ॥

॥ सिद्धापनरसभेया तित्थातित्थाइसिद्धभेएण

एएसखेवेण जीवविगप्पासमख्खाया ॥ २५ ॥

॥ (चउपय) चार पैरसे चलनवाले (उरपरिप्पा) छातीसे और पटसे चलनेवाले उरपरिसर्प (भुयपरिसप्पा) भुजपरिसर्प भुजासे चलनेवाले (य) और (थलयरातिविहा) थलचरके तीन भेद है (गो) गौ (सप्प) सांप (नउल) नौलिया (पमुहा) प्रमुख (बोधव्वा) जानना (ते) व (समासेण) सक्षेपसे कहा ॥ २१ ॥

॥ अब खेचर जीवोंके भेद कहते है ॥

॥ खयरारोमयपक्खी चम्मयपक्खीयपायडाचेव
नरलोगाओबाहि समुग्गपक्खीवियपक्खी ॥ २२ ॥

(खयरा) खेचर आकाशमे उडनेवाले पक्षीयो (रोमयपक्खी) रोमकी पाखवाले पक्षी (चम्मयपक्खी) चर्मकी पाखवाले पक्षी (पायडा) प्रगट है (चेव) निश्चे (नरलोगाओ) मनुष्य लोकसे (बाहि) बाहेर (समुग्गपक्खी) सकोची पाखवाले पक्षी (वियपक्खी) खुली पाखवाले पक्षी ॥ २२ ॥

॥ सवेजलथलखयरा समुच्छिमागब्भयादुहाहुति-
कम्माकम्मगभूमी अतरदीवामणुस्साय ॥ २३ ॥

विहा) सात प्रकारे (नायव्वा) जानना (पुढवि) पृथ्वीरत्नप्रभा आदिका (भेएण) भेदोसे ॥ १९ ॥

॥ अब तिर्यंच पचंद्री और जलचरतिर्यंचका भेद कहत है ॥

॥ जलयरथलयरखयरा तिविहापंचिंदियातिरिक्खाय
सुसुमारमच्छकच्छव गहामगराईजलचारी ॥ २० ॥

॥ (जलयर) जलचर (थलयर) स्थलचर (खयरा) खेचर आकाशमे उडनवाले (तिविहा) एसे तिन प्रकार (पचिंदियातिरिक्खाय) तिर्यंच पचंद्री जीनोका है (सुसुमार) शिशुमार (मच्छ) माछले (कच्छव) काछव (गहा) जलजंतु (मगराई) मगरमच्छ आदि (जलचारी) जलचरजीव है ॥ २० ॥

॥ अब स्थलचरजीवोंके भेद कहत है ॥

॥ चउपयउरपरिसप्पा भुयपरिसप्पायथलयरातिविहा
गोसप्पनउलपमुहा वोधव्वातेसमासेण ॥ २१ ॥

॥ अब चउरिंद्रिय जीवोंके भेद कहते है ॥

॥ चउरिंदियायविच्छु ढिंकुणभमरायभमरियातिड्डा–
मच्छियडसामसगा कसारीकविलडोलाइ ॥ १८ ॥

॥ (चउरिंदिया) चौरिंद्रीवाले (य) और (विच्छु) बिछु (ढिंकुण) बग (भमराय) भमरा (भमरिया) भ्रमरिका (तिड्डा) तिडी (मच्छिय) मख्खी (डसा) डाँस (मसगा) मच्छर (कसारी) कसारी (कविल) करोलिया (डोलाई) खडमाकडी ॥ १८ ॥

॥ अब पचेन्द्री जीव ओर नारक पचेन्द्रीका भेद कहते है ॥

॥ पञ्चिंदियायचउहा नारयतिरियामणुस्सदेवाय
नेरइयासत्तविहा नायव्वापुढविभेएण ॥ १९ ॥

॥ (पञ्चिदिया) पचेंद्री जीवों (य) और (चउहा) चार प्रकारे (नारय) नारक (तिरिया) तिर्यंच (मणुस्स) मनुष्य (देवाय) देवता (नेरइया) नारकी (सत्त-

(मेहरि) काष्टके कीड (किमि) कृमिया (पुयरगा) पानीके पुर (बेइंदिय) दो इन्द्री जीवों (माइवाहाई) चूडेल इत्यादि ॥ १५ ॥

॥ अन दो गाथाओंसे ते इन्द्रिय जीवोंके भेद कहेत हे ॥

॥ गोमीमकणजूआ पिपीलिउद्देहियायमक्कोडा
इल्लियघयमिल्लीओ सावयगोकीडजाइआ ॥ १६ ॥
॥ गद्दहयचोरकीडा गोमयकीडायधन्नकीडाय
कुंथुगुवालियइलिया तेइंदियइंदगोवाई ॥ १७ ॥

॥ (गोमी) कानखजुरा (मकुण) खटमल (जूआ) जुआ तथा जू (पिपीलि) चीटीका (उद्देहिया) उद्देहिका (य) और (मक्कोडा) माकोडा (इल्लिय) इल्लिका (घयमिल्लीओ) जो घीमिलो घृतमें पडति है सो (सावय) जो चक्षुमें पडति है सो जू (गोकीड) गायके कानमे पडति है सो (जाइआ) इत्यादि प्रकारकी जातियों औरभी (गद्दय) गधैया (चोरकीडा) विष्टाके कीडे (गोमयकीडा) गोबरके कीडे (य) और (धन्नकीडा) धान्यके कीडे (य) और (कुंथु) कथुआ (गोवालिय) गोपालिका (इलिया) इलिका (तेइंदिय) तेइन्द्री जीवों (इंदगोवाई) इन्द्रगोप जो वर्षाकालमे होत हे इत्यादि ॥१६-१७॥

॥ अब पृथ्वीकाय आदि जीवोंके विषयमें कुछ विशेष कहते है ॥

॥ पत्तेयतरुमुत्तपचविपुढवाइणोसयललोए
सुहुमाहवतिनियमा अतमुहुत्ताउअद्दिस्सा ॥ १४ ॥

॥ (पत्तेयतरु) प्रत्येक वनस्पतिकायको (मुत्त) छोडकर (पचवि) पाँचोही (पुढवाइणो) पृथ्वीकाय आदि लेकर साधारणतक (सयललोए) सब लोकके विषे भरी हुइ हे (सुहुमा) सुक्ष्म (हवति) हे (नियमा) निश्चे करके (अतमुहुत्ताउ) अन्तर्मुहूर्त आयुवाला (अद्दिस्सा) अदृश्य हे (चरमचक्षुस नही देखा जाव) ॥ १४ ॥

॥ अब दो इद्रिय जीवोका भेद कहत हे ॥

॥ सखकवड्डयगडुल जलोयचदणगअलसलहगाई
मेहरिकिमिपूयरगावेइदियमाइवाहाई ॥ १५ ॥

॥ (सख) शखदक्षीणवर्त आदि (कवड्डय) कोडाकोडीयो (गड्डुल) गडोला (जलोय) जोक (चँदगण) चदनक (अलस) अलशीया (लहगाई) लालीया जीवो

(अणनकायाण) अनन्तकाय जीवाके (तेसि) उमके (परिजाणणथ्थ) अच्छीतरह जाननेके लिये (लख्खणमेय) यह लक्षण (सुए) सूत्रके विषे (भणिय) कहा हे (गुढ) गुप्तहो जिसका (सिर) फूलआदि (सधि) साधा (पव्व) और गाठा (समभग) जो तोडनेपर समभाग टुकडा हो जाय (अहीरगच) जिसम कोई ततु न हो (छिन्नरुह) छेदीने बावनसे भी उगजावे (साहारण) साधारणका (सरीर) शरीर हे (तव्विवरीयच) इमसे विपरीत लक्षणवाली (पत्तेय) प्रत्येक वनस्पतिकाय हे ॥ ११–१२ ॥

॥ अब एक गाथासे प्रत्येक वनस्पतिकायके लक्षण तथा भेद कहते हे ॥

॥ एगसरीरेएगो जीवोजेसितुतेयपत्तेया

फलफूलछल्लिकट्ठा मूलगपत्ताणिबीयाणि ॥ १३ ॥

॥ (एगसरीरेएगो) एक शरीरमें एक (जीवो) जीव (जेसि) जिसम हो (तु) और (तेय) उसको (पत्तेया) प्रत्येक कहिये (फल) फल (फूल) फूल (छल्लि) छाल (कट्ठा) काष्ट (मूलग) मूल (पत्ताणि) पत्ते (बीयाणि) और बीज ऐसे एक वृक्षमें सात ठीकाने जीव होते हे ॥ १३ ॥

पाँच प्रकारकी (सेवाल) सेवाल (भूमिफोडाय) भूमिफोडा छत्रके आकारे चोमासामें होताहेसो (अल्लयतिय) अद्रक, लीली हल्दी और कचुरा यह तीन (गज्जर) गाजर (मोथ्थ) नागरमोथ (वथ्थुला) वथुआ (थेग) थेगकी भाजी (पल्लंका) पाल्खो (कोमल) कोमलहो (फल) फल जीसमें बीज न हो (च) और (सिराइ) जिसका पुक आदि प्रगट दखनेम नही आता है एसे (सिणाईपत्ताइ) सनआदिक पत्ते (थोहरि) थूहर (कुआरि) पारपाठो (गुग्गुलि) गुगलाँनी (गलोय) गिलोय (पसुराइ) प्रसुन (छिन्नरूहा) छेदकर वावनसे भी पीछा उग जावे ॥ ११–१२ ॥

॥ अब दो गाथाओंसे अनन्तकायका विशेष लक्षण दीखलाते हे ॥

॥ इच्चाइणोअणेगे हवतिभेयाअणतकायाण
तेसिपरिजाणणथ्थ लरकखणमेयसुएभणिय ॥ ११ ॥
॥ गूढसिरसघिपव्वं समभगमहीरुगंचछिन्नरुह
साहारणंसरीर तव्विवरीयचपत्तेय ॥ १२ ॥

॥ (इच्चाइणो) इत्यादिक (अणेगे) अनेक (हवति) हे (भेया) भेदो

॥ साहारणपत्तेया वणस्सइजीवादुहासुएभणिया
जेसिमणताणतणु एगासाहारणातेऊ ॥ ८ ॥

॥ (साहारण) साधारण (पत्तेया) प्रत्येक (वणस्सइ) वनस्पतिकायक (जीवा) जीवो (दुहा) दो प्रकारके (सुए) सूत्रके विषे (भणिया) कहा है (जेसिं) जिसका (अणनाण) अनन्त जीवोंका (तणु) शरीर (एगा) एकहो (साहारणा) साधारण (तेऊ) उसको साधारण कहिये ॥ ८ ॥

॥ अब दो गाथाओंसे साधारण वनस्पतिकाय जीवोंके भेद कहते हे ॥

॥ कदाअकुरकिसलय पणगासेवालभूमिफोडाय
अल्लयतियगज्जरमोथ्थवथ्थुला थेगपल्लका ॥ ९ ॥
॥ कोमलफलचसव्व गूढसिराइसिणाइपत्ताइ
थोहरिकुंआरियुग्गुलि गलोयपमुहाइछिन्नरुहा ॥ १० ॥

॥ (कदा) सनजमीकन्द (अकुर) अंकुरा (किसलय) नयेकोमलपत्ते (पणगा)

॥ (इगाल) अँगाराकी (जाल) ज्वालाकी (मुम्मुर) वोभरकी (उक्का) उल्का पातकी (असणि) वज्रकी अग्नि (कणग) आकाशमे उडनेवाले अग्निके कणे (विज्जु) बिजलीकी (आईया) इत्यादि लेकर (अगणि) अग्निकाय (जियाण) जिवोंका (भेया) भेदो (नायव्वा) जानना (निउणबुद्धीए) अच्छी बुद्धी करके ॥ ६ ॥

॥ अब एक गाथासे वायुकाय जीवोंके भेद कहते हैं ॥

॥ उब्भामगउक्कलिया मडलिमहसुद्धगुजवायाय
घणतणुवायाईयाभेयाखलुवाउकायस्स ॥ ७ ॥

॥ (उब्भामग) उद्भ्रामक वायु उचा चढने वाला (उक्कलिया) निचे जमीनसे फर्सता चले सो उत्कलिक (मडलि) विंटोलिया (मह) महावायु (सुद्ध) शुद्ध मद वायु (गुजवायाय) गुजारव करता चलेसो (घण) घनवा (तणु) तनवा (वाया) वायु (आईया) इत्यादिक (भेया) भेदो (खलु) निश्चे (वाउकायस्स) वायुकायका है ॥ ७ ॥

॥ अब एक गाथासे वनस्पतिकाय जीवोंके भेद कहते है ॥

तेनतुरी (ऊस) क्षार (मट्टी) मिट्टीकी (पाहाण) पाषाणकी (जाईओणेगा) अनेक प्रकारकी जातीओ (सोवीरजण) अजन करनेका सुरमा (लूणाई) पाच प्रकारके लुण (पुढवि) पृथ्वीकायका (भेयाइ) भेदो (इच्चाई) ईत्यादिक है ॥ ३–४ ॥

॥ अब एक गाथासे अपूकाय जीवोका भेद कहत हे ॥

॥ भोमतरिक्खमुदग ओसाहिमकरक हरितणूमहिआ
हुतिघणोदहिमाई भेआणेगायआउस्स ॥ ५ ॥

॥ (भोम) भूमिका (अतरिक्ख) आकाशका (उदग) जल (ओसा) ओसका (हिम) बफका (करग) गडाका (हरितणू) हरि वनस्पती पर रहाहुवा (महिया) धुअरका (हुति) है (घणोदहिमाई) घनोदधिआदि (भेआ) भेदो (अणेगाय) अनेक प्रकारके (आऊस्स) अपूकायका ॥ ५ ॥

॥ अब एक गाथासे अग्निकाय जिवोंका भेदो कहत हे ॥

॥ इंगालजालमुम्मुर उक्कासणिकणगविज्जुमाईया
अगणिजियाणभेयानायवानिउणवुद्धीए ॥ ६ ॥

॥ (जीवा) जीव (मुत्ता) एक मुक्तिका (संसारिणो) दुसरा संसारी (य) फिर (तस) त्रसजीव (थावरा) स्थावर जीव (य) और (संसारी) संसारीके दो भेद हैं (पुढवि) पृथ्वीकाय (जल) अपूकाय (जलण) तेउकाय (वाऊ) वाउकाय (वणस्सई) वनस्पतिकाय (थावरा) स्थावरके पाँच भेद (नेया) जानना ॥ २ ॥

॥ अब दो गाथाओंसे पृथ्वीकायके भेद कहते हैं ॥

॥ फलिहमणिरयणविद्रुम हिंगुलहरियालमणसिलरसिंदा
कणगाइधाउसेढी वन्नियअरणेट्टयपलेवा ॥ ३ ॥

॥ अभ्भयतूरीऊस मट्टीपाहाणजाइओणेगा
सोवीरंजणलूणाई पुढविभेयाइइच्चाइं ॥ ४ ॥

॥ (फलिह) स्फाटिकरत्न (मणि) चंद्रकांतादि मणीरत्न (रयण) रत्न (विद्रुम) मूंगीया (हिंगुल) हिंगलू (हरियाल) हरताल (मणसिल) मैनसिल (रसिंदा) पारो (कणगाई) कनकादि सातों (धाउ) धातु (सेढी) खड़ी (वन्निय) लालरंगकी मट्टी (अरणेट्टय) अरणेट्टय नामे पाषाण (पलेवा) पलेवा नाम पाषाण (अभ्भय) अभरख (तूरी)

॥ ॐ आनन्दघनगुरुभ्योनमः ॥

॥ जीवविचारप्रकरणंमूलहिन्द्यनुवादसहितम् ॥

॥ भुवणपईंववीरं नमिऊणभणामि अबुहबोहथ्थं
जीवसरूव किंचिवि जहभणियपूवसूरिहि ॥ १ ॥

॥ (भुवण) तिन भुवनमें (पईंव) दीपक समान (वीर) वीरप्रभुको (नमिऊण) नमस्कार करके (भणामि) कहता हु (अबुहबोहथ्थ) अज्ञजीवोंको बोध होनेके लिये (जीव) जीवका (सरूव) स्वरूप (किंचिवि) किंचितमात्र (जह) जैसे (भणिय) कहा है (पूवसूरिहिं) पूर्वक आचार्योंने ॥ १ ॥

॥ जीवामुत्तासंसारिणोय तसथावरायसंसारी
पुढविजलजलणवाऊ वणस्सईंथावरानेया ॥

॥ श्रीलघुप्रकरणमाला हिन्द्यनुवादसहिता ॥

हिन्द्यनुवादक

अध्यात्म जीतमुनि

छपाके प्रसिद्ध करनेवाले शेठ वाडीलाल पानाचंद–पट्टणनिवासी

तर्फसे

भेट

श्रीअभयजैन ग्रन्थ
नाहटा कोटड़ी
बीकानेर,

वीर संवत् २४४५ विक्रम संवत् १९७५ सन १९१८

वडोदरा—शियापुरा–लुहाणामित्र स्टीम प्रिंटिंग प्रेसमे ठक्कर विट्ठलभाइ आशारामने प्रसिद्ध कर्ताके लिये छापके प्रसिद्ध किया ता १–१–१९१९